तृतीय अध्याय

भीष्म साहनी के उपन्यासों में चित्रित समस्या

"तृतीय अध्याय"

"भीष्म साहनी के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ"

3.1. साम्प्रदायिकता की समस्या :-

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में अनेक उपन्यास साम्प्रदायिक समस्या के बारे में मिलते हैं। 1973 में प्रकाशित भीष्म साहनी का उपन्यास भी इसी प्रकार का है। "तमस" में साम्प्रदायिकता का पूरा रूप देखने मिलता है।

साम्प्रदायिक समस्या को प्रकट करने में कुछ हिंदू और मुसलमान नेताओं ने इसे योगदान दिया है। इनके साथ-साथ अंग्रेजों ने भी अपनी फूट और "तोड़ो-फोड़ो" नीति से इस आग को भडकाया।

भीष्म साहनी ने अपने उपन्यासों में इन लोगों के दंगों की धुन को इसतरह स्पष्ट किया है कि हिंदू-मुस्लिम दंगे जगह-जगह भड़कने लगे थे और पाकिस्तान की माँग बार-बार हो रही थी, इन दंगों की लहर फूटकर इतनी बढ़ रही थी कि नेता लोग भी उन्हें काबू नहीं कर सके। इसी दंगों का फायदा अंग्रेजों को हुआ उनके साथ में उन्हें तोड़ने का हाथियार ही मिला और इसका अन्जाम माहौल में सचमुच साम्प्रदायिकता का जहर घुलने लगा।

भीष्म साहनी प्रेमचंदजी की तरह यथार्थवादी लेखक हैं। उनके इस उपन्यास की कहानी आम आदमी की जीवन्त कथा है। 'तमस' में उन्होंने आम आदमी की प्रतिष्ठापना कर उन लोगों की त्रासदी और उनके साथ किया हुआ अत्याचारों का स्वाभाविक ढंग से चित्रण किया है। इस उपन्यास का लेखन सामान्य जनताके स्तरमें रहकर किया है।

"तमस" के प्रथम खंण्ड में नागरी जीवन में साम्प्रदायिक वैमनस्य की भावना कैसी उभरी, नौकरशाही वैमनस्य की आग को कैसे भड़का दिया, परिणामस्वरूप

हिंदू-मुस्लिमों में झगड़े कैसे मोल लिए और एक-दूसरे के गली-मुहल्ले में जाना खतरनाक हो गया इत्यादि बातों का लेखक ने वर्णन किया है।

आज़ादी से पहले हिन्दुस्थान में साम्प्रदायिकता को लेकर जो पाशविकता देश में हुई इन परिस्थितियों का चित्रण सूखते जानेवाले स्नेह, सूत्रों और टूटते हुए मूल्यों का स्पष्टीकरण इसमें दिया है। साम्प्रदायिकता का हर एक पहलू खुलकर रखा है।

साम्प्रदायिकता

भीष्म साहनी के "तमस" इस उपन्यास में 1947 में रावलपिंण्डी और आसपास के गाँवों में हुए हिंदू-मुस्लिम दंगे यह पाँच-छः दिनों तक रहे थे। उन दिनों में साम्प्रदायिकता का विष घोल रखा था।

भारत देश धर्मप्रधान देश है। इसमें अनेक धर्म के लोग रहते हैं। उनके मन में धर्म की भावना भी ज़्यादा से ज़्यादा है। भारत में प्राचीन काल से धर्म और धार्मिक सम्प्रदायों का निर्माण हुआ। इसमें उदार शिक्षा उच्च आदर्श तथा अध्यात्मिक ज्ञान से देश का कल्याण ही हुआ है। इसी कारण धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरूषार्थों की सिध्दी मनुष्य के लिए महत्त्वपूर्ण है। इन चारों का जो मनुष्य पालन करता है वही सुखी बनता है। धर्म विश्वबंधुत्व का संदेश देता है और मानव जीवन को उदात्त बना देता है। धर्म के पालन से व्यक्ति के मन में मधुर भावों की निर्मिति होती है और भक्ति का उदय होता है। धर्म मनुष्य के लिए उपलक्ष्य की तरह है। इन्ही कारणों से हमारे देश में अनेक महापुरूषों ने धर्म की रचना की है। इस सम्प्रदायों के कारण धर्म के प्रति रुचि उत्पन्न होती है।

जनता के शास्त्रकारों ने बताया है कि, "वेदविहित कर्म धर्म है और वे निषिध्द कर्म अधर्म है।"

हिंदू-मुसलमान और ईसाई अपनी अपनी धार्मिक पुस्तकों के वचनों से बध्द है। "बाईबल" में जो लिखा है वह ईसाइयों के लिए धर्म है, जो अविहित है वही अधर्म है। "कुरान" में जो लिखा है वह मुसलमानों के लिए धर्म है और

जिसका निषेध है वही अधर्म है।

सम्प्रदाय की व्युत्पत्ति और व्याख्या

"सम्प्रदाय का अर्थ है - धर्म का विशेष पथ।"

"साम्प्रदायिकता का अर्थ है - साधन यथा रूढ़।"

धर्म के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कोई न कोई "पथ" अपनाना पड़ता है तो वह है संप्रदाय। संप्रदाय बनते हैं, बदलते हैं, मिट भी जाते हैं। धर्म भूमि है, उसके बदलने और नष्ट होने का अर्थ है प्रलय। वह नित्य है, सत्य है।"[1]

धर्म और संप्रदाय

धर्म आत्मा है विविध संप्रदाय उसके शरीर हैं। सभी शरीर में आत्मा एक है। संप्रदायों का निर्माण आचार्यों ने किया है। उसका विभाजन साहित्य दर्शन और धर्म के आधार पर किया जा सकता है। धर्म संप्रदायों में जैन धर्म, आचार्य संप्रदाय, शैव सम्प्रदाय, वैष्णव सम्प्रदाय, सूफी सम्प्रदाय, संत सम्प्रदाय, नाथ सम्प्रदाय, इस्लाम सम्प्रदाय, चैतन्य सम्प्रदाय इन सम्प्रदायों के अनेक उपसम्प्रदाय भी हैं, जो सभी भारतवासी हैं।

धर्म के बारे में राधा कृष्णन ने कहा है।। "जब तक मनुष्यों पर धर्म का प्रभाव रहा समाज में अशिक्षा और अन्धविश्वासों के रहते हुए भी आज की अपेक्षा अधिक शांति और सद्भावना थी। लेकिन जो ज्ञान की वृध्दि हुई धर्म का अनादर बढ़ा। समाज में अशांति की भी वृध्दि होती गयी।"[2]

क्रोसो ने धर्म को पौराणिक अंधविश्वास बताया है, तो लेनिन धर्म को पतनशील समाज का नशा बतलाते हैं। "मनुष्य के भीतर बसनेवाले ईश्वरीय रूप की उपेक्षा से आदमी बीमार हो गया है। उसकी आत्मा रूग्ण हो गयी है।"[3]

आज ये विचार धर्म की विकृतावस्था पर प्रकाश डालते है, जो आज का सत्य है।

सांम्प्रदायिकता का स्वरूप

भीष्म साहनी का "तमस" यह उपन्यास भारत विभाजन के कारण भीषण साम्प्रदायिक दंगों की करूण गाथाओं को प्रस्तुत करनेवाला महत्त्वपूर्ण और चर्चित उपन्यास है। उन्होंने सांम्प्रदायिकता का स्वरूप आयने की तरह स्पष्ट करके हमारे सामने दिलचस्पी के साथ रखा है।

साम्प्रदायिकता के कारण समाज ही समाज को अंधेरे में किसप्रकार ढकेलता है, सामान्य व्यक्ति-व्यक्ति उजड़ी जिन्दगी को मूक-दर्शक की भाँति देखता है, इसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति भीष्म साहनीजी ने अपने "तमस" उपन्यास में की है।

साम्प्रदायिकता की जड़े आज़ादी के पहले थी, उतनी आज भी यत्र-तत्र दिखाई देती है। धार्मिकता का जहर आज भी हमे दिखाई देता है। लेखक ने लिखि हुई उस वक्त की साम्प्रदायिकता हमे आज भी उतनी ही गहराई से दिखाई देती है। धर्मान्धता को रोकने के जगह पर शासन की ओर से सांम्प्रदायिकता संगठनो को निरन्तर बढ़ावा मिला है।

भीष्म साहनी सांम्प्रदायिकता की वजह दि-राष्ट्रवाद के सिध्दान्त और भारत-विभाजन को मानते हैं। उन्होंने अपने इस उपन्यास में अमानवीयता का सभी दृष्टि से चित्रण किया है। "काल विस्तार की दृष्टि से यह केवल पाँच दिनों (आज़ादी से पहले पाँच दिनों) की कहानी है, लेकिन इन पाँच ही दिनों की कथा में जो प्रसंग, जो सन्दर्भ और जो निष्कर्ष उभरते हैं, उनके कारण, यह पाँच दिनों की कथा बीसवी सदी के भारत की अब तक के लगभग 80 वर्षों की कथा हो जाती है।"[4] धर्ममार्तण्ड वानप्रस्थीजी धर्म के नाम पर सामान्य हिन्दुओं के मन में मुसलमानों के प्रति साम्प्रदायिकता के भयानक बीज बो देते हैं। इसी साम्प्रदायिकता की आग ने भारत-पाकिस्तान के रूप में देश का विभाजन किया। हजारों लोगों को मौत के हवाले किया, इन्सान को धर्म की बेडियों में बाँध दिया। धर्म के नाम पर लूट-पाट, हत्याएँ और आगजनी का ताँण्डवनृत्य हुआ है, लोगों का धर्मपरिवर्तन किया गया है। धर्म का नाम लेकर सामान्य जनता को सांम्प्रदायिकता के आग में

ढकेल दिया है।

3.2. "तमस" में साम्प्रदायिकता के बेनकाब घिनौने चेहरे

भीष्म साहनी की "तमस" में यह दृष्टि रही है कि हिंदू और मुस्लिम साम्प्रदायों मे "फूट डालने"वाले अंग्रेज थे। अंग्रेजों ने ही "डिवाइड एण्ड रूल" की नीति बनवा कर दोनों सम्प्रदायों में वैमनस्य पैदा किया, उन्हें लढ़ने के लिए प्रवृत्त किया। हिन्दुस्थान, पाकिस्तान में उन झगड़ो का असर हुआ। इन सबका परिणाम भोले-भाले हिंदू और मुसलमान गरीब, आम जनता पर हुआ। वह सब इस अंग्रेज के षडयंत्र में फसकर उनकी शिकार बन गये और अंधे बनकर आपस में लड़कर मरे थे।

उपन्यास की शुरूआत में ही शहर में साम्प्रदायिक दंगा कराने की पूर्वयोजना से होती है। हमे इस उपन्यास की शुरूआत पढ़ाने से यह मालूम होता है कि दंगों की शुरूआत करानेवाले लोग पर्दे के पीछे और दंगों में शामिल होकर मारकाट करनेवाली निर्दोष आम गरीब जनता, वह लोग आमने-सामने हैं। यहाँ पर दंगा हो नहीं रहा, कराया जा रहा है। दंगा बढ़ नही रहा है, बढ़ाया जा रहा है। इन्हीं कारणों से हिंदू और मुसलमानों के बीच की खाई बढ़ती ही जा रही है। इतनी बढ़ी है कि इन दोनों में समझाने या समझौते की कोई बात ही नहीं रह गयी है। एक तरफ का नारा "भारतमाता की जय" और "महात्मा गांधी की जय" के नारे लग रहे हैं और दूसरी तरफ "पाकिस्तान जिन्दाबाद" और "कायदे आजम जिंदाबाद" के नारे लग रहे हैं।"[5]

इसप्रकार हिंदू-मुस्लिमों के दंगे हो रहे थे। काँग्रेस हिन्दुओं की जमात है, और मुस्लिम लीग मुसलमानों की इसी कारण काँग्रेस मुसलमानों का कोई काम नहीं करता। भीष्म साहनी कहते हैं, "काँग्रेस वालों को समझाने पर काँग्रेस में हिंदू है, मुसलमान, सिक्ख सभी है, लेकिन मुस्लिम लीग वाले कहते हैं कि काँग्रेस में जो मुसलमान हैं , वे हिन्दुओं के कुत्ते हैं, वे लोग कहते हैं कि हम हिन्दुओं

से नफ़रत नहीं करते हम तो उनके कुत्तों से नफरत करते हैं। मौलाना आझाद कॉंग्रेस के अध्यक्ष हैं वे कहते हैं, "मौलाना आझाद हिंदुओं का सबसे बड़ा कुत्ता है। गांधी के पीछे दुम हिलाता फिरता है।"[6]

इसप्रकार पंजाब में आर्यसमाज और हिंदू सभा ने सक्रियता से हिंदुत्व का प्रचार करके साम्प्रदायिकता को फैलाने का काम किया था।

उपरी सब बातें या झगड़े कितने तुच्छ और फालतू हैं। अंग्रेजी डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड और उनकी पत्नी लीजा के बातचीत से हमे मालूम होता है, ये सब लोग सब लोगों के धर्म, नाम, रहन-सहन, और वेशभूषा अलग है, खान-पान अलग हैं। ये बाते अलग होते हुए भी लेखक ने लीजा और रिचर्ड को लेकर उनका दृष्टिकोन स्पष्ट होता है कि वे सिक्ख, इसाई, मुसलमान, हिंदू इन सबको भीष्मजी इन्सान मानते हैं, बाकि सब भेद को तुच्छ मानते हैं। उन्होंने यह भी कहा है, इन्सान निर्दोष है, दोषी है ये राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था।

"तमस" में लेखक ने स्पष्ट किया है कि "तमस" का अर्थ है अंधविश्वास और अज्ञान, इन पर चलनेवाली राजनीति यह गलत ही है, क्योंकि यह धर्म के आधार पर बनवाकर चलाई जानेवाली है। यह लोगों को विभाजित करके कमजोर बना देती है। उनके कमजोरी का, उनके अज्ञान, अंधविश्वासों का फायदा अंग्रेज उठा रहे थे। दोनों भी सम्प्रदाय के लोग अपना विवेक खो बैठे थे। इन दोनों का तनाव कम होने के बजाय बढ़ ही रहा था। समझाने से यह तनाव कम हो सकता लेकिन अंग्रेजी सरकार तनाव को दूर करने में समर्थ होते हुए भी दूर नहीं करना चाहते। उन्होंने साम्प्रदायिकता को फैला कर लोगों को भड़काया था, जो सम्प्रदाय में आस्था रखनेवाले कम्युनिस्ट लोग थे उनका भी बल टूटने लगा था। लेखक ने स्पष्ट किया है जनता को अज्ञान में रखकर उनका नाज़ायज फायदा उठाते हैं ये लोग।

"तमस" में पहली घटना है सूअर मरवाकर मस्जिद की सीढ़ी पर फेंक देना, मुस्लिमों को भड़काना यह पहली घटना, प्रतिक्रियास्वरूप दूसरे वर्ग द्वारा

गाय की हत्या। इन घटनाओं की शुरूआत मुरादअली जैसे लोग हैं, जो पर्दे के पीछे रहकर दंगों की शुरूआत करते हैं। दूसरी तरफ शांतिपाठ पढ़ाते "सर्वे भवन्तु सुखिन : और द्यौ शांति पृथिवी शांतिराप" शांति, जपनेवाले वानप्रस्थी जब सर्वे में से "मुसलमान" को अलग कर देते हैं और शांतिपाठ के लोगों को यह बताने लगते हैं कि "उबलता तेल शत्रु पर डाला जा सकता है जलते अंगारे छत पर से फेके जा सकते हैं।"[7] हिन्दु-मुस्लिम दोनों इन चीजों की असलियत नही समझते और अज्ञान, अंधविश्वासों के फलस्वरूप धर्मान्ध हो उठते हैं और साम्प्रदायिकता की शुरूआत इस तरह होती है।

भीष्म साहनी ने इसमें एक तरफ अखाड़ा संचालक मास्टर देवव्रत जैसे के प्रति घृणा तो दूसरी तरफ रणवीर द्वारा इत्रफरोश की हत्या, देवव्रत द्वारा रणवीर को हिंसा और साम्प्रदायिकता की दीक्षा। इस तरह की हस्यास्पद घटनाएँ लेखक ने चित्रित की गयी है। दूसरी बात नासमझ इंद्र युवक "म्लेंच्छ" की हत्या करता है। एक मुसलमान थोडी देर के बाद इंद्र को गली में अकेला समझकर सुरक्षित पहुँचा देने की बात कर रहा था, लेकिन वह उसी लड़के के हाथों से मारा जाता है। इन दृश्यों के साथ साम्प्रदायिकता और हिंसक संगठनों का वह घिनौना चेहरा बेनकाब हो जाता है।

लेखक ने इसमे स्पष्ट किया है साम्प्रदायिक हिंसा कितनी गलत और व्यर्थ चीज है, यह दिखाने के लिए निरापराध निर्दोष लोगों की हत्या रघुनाथ, मिल्खी, शाहनवाज इन लोगों को मारने के पीछे कुछ तुक भी नहीं है।

साम्प्रदायिकता की लड़ाई में वर्ग संघर्ष नहीं होता बल्कि शोषक-शोषित सब लोग संम्प्रदाय के आधार पर विभाजित हो जाते हैं। देवदत्त को दंगों, लड़ाई मजदूरों के बारे में खबर मिलती है, "अगर मजदूर आपस में लड़ सकते हैं, तो यह विष बहुत गहरा असर कर चुका है। उनका प्रयत्न सफल होता है, पानी पर खिंची लकीर की तरह बन जाते हैं।

"तमस" के द्वितीय खंण्ड में गाँवों की दयनीय स्थिति, फिसादों की आग गाँवों तक पहुँच चुकी है, मुसलमानों का गाँव और वहाँ सिक्ख परिवार पर पड़ी

मुसीबतों के माध्यम से साम्प्रदायिकता की पूरी की पूरी तस्वीर उभारने का प्रयास किया है।

इस उपन्यास की कहानी पाँच दिन की है। जो घटना है वह अमृतसर और उसके आसपास की है। लेखक ने इस घटनाओं को खुद अपनी आँखों से देखा है। लेकिन खुद तटस्थ रहकर घटनाओं कावर्णन किया है। लेखक अंत में मानता है सांम्प्रदायिकता का मूल कारण अज्ञान, धर्मअन्धता और अंधविश्वासों पर पलने वाले धर्म को मानता है। लेखक ने सांम्प्रदायिकता को हर पहलू में चित्रित किया है।

साहित्य में सांम्प्रदायिकता की अभिव्यक्ति

"तमस" की पहले अनेक हिन्दी साहित्य में साम्प्रदायिकता के चित्र लेखकने प्रस्तुत किये। सबसे पहले प्रेमचंदजी ने इस साम्प्रदायिकता का साहित्य में हल किया। उसके बाद 'राही मासूम रजा' ने साम्प्रदायिक समस्या का सर ठीक से पहचाना साहित्य में भीष्म साहनी की तरह अनेक लेखकों ने अपने खुद के अनुभव और संवेदना के धरातल पर उपन्यास के विषय, कथानक बताया है। कुछ इने गिने लेखकों में मासूम रजा, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा, प्रेमचंद, भैरवप्रसाद गुप्तजी इस प्रकार के अनेक लेखकों ने हिन्दी साहित्य में साम्प्रदायिक समस्या प्रस्तुत करके साम्प्रदायिकता दूर करने के लिए बड़ी बड़ी कोशिशे की हैं।

"झूठा सच" इस उपन्यास में यशपालजी ने अपने उपन्यास में 15 अगस्त 1947 के बाद के भारत का चित्र सींचा है। लाहौर में जो सांम्प्रदायिकता की उग्र स्थिति हुई थी उसे उन्होने स्पष्ट रूप से उपन्यास में लिया है। लाहौर और उनके आस-पास के गाँवों में सांम्प्रदायिकता और शोषक-शोषितों की उग्रता और भारत में आम आदमी में होनेवाली हिंसा, वर्गीय घृणा न होते हुए उन लोगों में बदले की भावना के साथ-साथ धार्मिक घृणा भी उन्हें दिखाई देती है।

इसमें लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि सांम्प्रदायिकता का विष देश का विभाजन सिर्फ नहीं रहा स्वाधीनता के बाद भी इन ब्रिटीशों ने समूहों में विघटन

और अलगाव खड़ा किया। राष्ट्र को एकता मिली सिर्फ नाममात्र रह गई।

कॉंग्रेस की नीति, मुस्लिम लीग उसके विरूध्द ब्रिटीश नीति का वर्णन किया गया है। कॉलेज में पढ़नेवाले हिंदू छात्र दारा मुसलमान प्रोफेसर को पीटने की घटना इसप्रकार की घटनाओं द्वारा धर्मान्धता को भड़काया है और सॉम्प्रदायिकता की आग भड़कती है। मुसलमानों द्वारा हिंदू पर अत्याचार। गांधीजी द्वारा कुरान पढ़ते ही सब मिलकर आते हैं, "बन्द करो। गांधी मुर्दाबाद" इस तरह के नारे वे लगाते हैं। जिन लोगों ने कुरान पढ़ा उन्हीं लोगों ने हमारे कुछ लोगों के बच्चों की कत्ल की। मॉं-बहनों के साथ बलात्कार किया। इस सॉम्प्रदायिकता के कारण गांधी जैसे लोगों को भी विरोध किया।

इसप्रकार इस उपन्यास में यशपालजी ने सॉम्प्रदायिकता का नग्न वर्णन राष्ट्रियता की ओट में भारत विभाजन के कारण हुऑं रक्तपात इस सबकी अभिव्यक्ति "झूठा सच" में की है।

"भूले बिसरे चित्र" इस उपन्यास में भी साम्प्रदायिकता के कारण वैमनस्य का बहुत ही बड़ा सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। ब्रिटिश तो हिंदू-मुस्लिमों के खिलाफ भड़काते ही रहते हैं। इस बहुत बड़ी समस्या को इन्ही लोगों ने खड़ा किया। यह झगड़ा अट्ट रहा। ज्ञानप्रकाश के शब्दों में, "हिंदु-मुस्लिम समस्या को अंग्रेजों ने मुस्लिम लीग की स्थापना करके खड़ा कर दिया है। अगर हम मजहब को व्यक्तिगत चीज मान ले और समाज से अलग कर ले तो यह मसला आसानी से हल हो सकता है।". [8]

इस तरह यह साम्प्रदायिकता की आग तूल पकड़कर गहरा रूप ग्रहण कर रही है। हिंदु-मुस्लिम भेदभाव की इस खाई को नहीं बाटा जा सकता। समय-समय पर एकता के नारे लगाते हैं क्षणिक आवेश फिर नष्ट होते हैं। यह सब बनावटी ही है और बनावटी उपायों से ही नष्ट कर जा सकते हैं। लेखक ने यह "भूले बिसरे चित्र" इसमें स्पष्ट किया है।

"महाकाल" इस उपन्यास में अमृतलाल नागर ने पूँजीपति अंग्रेज साम्प्रदायिकता की अग्नि सुलगा कर जमींदार नवाबों में झगड़ा बढ़ाकर अपना स्वार्थ सिध्द करते हैं। इस उपन्यास का एक पात्र अजीम कहता है, "मैं कहता हूँ नवाब साहब और दयाल के बीच में हिन्दु मुसलमानों का झगड़ा डालो। ये लोग जब लड़ेंगे तभी हम लोगों का फैदा होगा।"[9] इस तरह के लोग पूँजी कमाने के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार हैं। हिंदू मुस्लिम दोनों वर्ग के लोग एक-दूसरे के साथ झगड़ा करके अपने धर्म को अपने आप को बड़ा समझने का घमंड करते हैं। यही झगड़े और उन लोगों की घमंड साम्प्रदायिकता और वर्ग संघर्ष को जन्म देती है। इस ब्रिटिशों ने साम्प्रदायिकता के कारण भारतीयों का शोषण किया और कॉंग्रेस का विरोध किया।

इसप्रकार धर्म व्यक्ति को कितना अन्धा बना देता है। हम किसलिए झगड़ते हैं, इसका कारण भी वे नहीं जानते। जहाँ पर धर्म के नाम पर झगड़ा चल रहा है, उन लोगों को साथ देने के लिए दूसरे आकर खड़े रहते हैं, और साम्प्रदायिक संघर्ष शुरू होता है। छुरेबाजी पत्थरों की भड़िमार से रक्तपात को निमंत्रण देती रही। "महाकाल" में यह लेखक ने प्रस्तुत किया है।

3.4. भीष्म साहनी के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ

प्रस्तावना

साम्प्रदायिकता की समस्या के बारे में भीष्म साहनी के "तमस" उपन्यास में आलोच्य काल से लिखे उपन्यासों में यह तथ्यपूर्ण उपन्यास है।

साम्प्रदायिक समस्या हमारे यहाँ अंग्रेजी शासन की देन है। प्राचीन इतिहास को पढ़ने में इस बात का पता चलता है कि इसके पहले इस प्रकार के साम्प्रदायिक दंगे नहीं हुए। द्विराष्ट्रवादी सिध्दान्त और हिन्दी उर्दू की समस्या को उभारा, मुसलमानों का कुछ भी नेतृत्व हो तो अंग्रेज उन्हें और भी प्रोत्साहित करते थे और हिंदू मुस्लिमों को ज्यादा से ज्यादा झगड़े बढ़ाने के लिए प्रवृत्त करते रहे। इसतरह

अंग्रेज इन दोनों को भड़काकर अपना उल्लू सीधा कर लिया करते थे। अंग्रेज इन दोनों को भड़काते है, लेकिन इसमें जो बली पड़ते है, वे निर्दोष गरीब, आम आदमी जिनका इनके दंगों से कोई भी सलूख नहीं। नत्थू, हरनामसिंह बन्तो, इब्राहिम, इत्रफरोश, इकबालसिंह, बूढा लुहार, करीमबख्श, बलदेवसिंह की बूढी माँ सुखवन्त, गण्डासिंह प्रकाशो आदि ऐसे निर्दोष लोंग हैं, इन जनसाधारण लोगों की मृत्यू होती है।

सांम्प्रदायिक समस्या एक युग की पुरानी समस्या है। लेकिन उस युग की साम्प्रदायिकता का रूप आज भी है। कम होने के बजाय वह बढ़ती गयी है। दंगे, लड़ाई, लूटमार, निर्दोषो की हत्या इससे कुछ भी कम नहीं। साम्प्रदायिकता से आज भी हमारे देश को मुक्ति नहीं मिली है। आज़ादी के पहले अपना कब्जा जारी रखकर हमारे देश की जमीन पर अपने पाँव मजबूत करने के लिए उन्होंने इस साम्प्रदायिकता का आधार वैसाखियाँ की तरह लेकर अपना स्वार्थ हासिल किया है। आज़ादी के बाद भी अपने ही देश के राजनीतिक लोग अंग्रेजों की तरह घृणित उपयोग कर रहें हैं। आज भी इन सबका शिकार बन रहे हैं। निर्दोष जनसामान्य लोग जो न हिंदू है, न मुसलमान बल्कि सिर्फ इन्सान है और एक बात सच है कि वह भारतीय नागरिक हैं।

समस्याएँ

भीष्म साहनी ने आज़ादी से पहले जो सांम्प्रदायिकता हुई उस वक्त के दंगों को आधार बनवाकर समस्या का सूक्ष्म विश्लेषण किया है और उन्होंने उन मनोवृत्तियों को भी खुले रूप से हमारे सामने रखने की कोशिश की है। उसमें उन्हें सफलता भी मिली है। "तमस" उपन्यास की तरह हिन्दी साहित्य में अनेक उपन्यास लिखे हैं। लेकिन भीष्म साहनी की कृति अलग ही है, उन्होंने हिंदु-मुस्लिम समस्या के सामाजिक-आर्थिक पहलुओं को एक-दूसरे की नज़रे से रेखांकित करते हुए अपनी अलग ही पहचान बनवायी है।

सांम्प्रदायिकता से पीड़ित हिंदू-मुस्लिम समाज की विडम्बनापूर्ण यथार्थ की पहेली की ओर हमारा ध्यान ले जाती है। "तमस" यह कृति, हिंदू-मुस्लिम

एक-दूसरे के प्रति घृणा, गरीब और अमीरों में फर्क है। कही अमीर मुसलमान अमीरों के साथ ही दोस्ती रखते हैं। जैसे शाहनवाज संम्पन्न मुसलमान और रघुनाथ जैसे सम्पन्न हिंदू में दोस्ती है। अमीर शाहनवाज अपने नौकर मिल्खी के जान से भी ज्यादा उन्हें अपने जेवरों की सुरक्षा की चिंता है। इस प्रकार "घृणित स्वार्थ के इस बिंदू पर साम्प्रदायिकता ग्रस्त समाज की खोखली और स्वयंसेवी अध्यात्मिकता भी नंगी हो जाती है।"[10]

डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड एक कुशल प्रशासक है। रिचर्ड भारतीय इतिहास और संस्कृति का प्रकांण्ड विद्वान है, वह अंग्रेजों का आदमी होने के कारण कठोर व्यवहार करता है। हयातबख्श, बक्षीजी, दोनों नेता उससे मिलने गये थे, वह चाहे तो इस तरह के दंगे रोक सकता था। उसकी पत्नी भी उन्हें कहती है , हिन्दु-मुस्लिमों में झगड़े हुए ये लोग आपस में लड़े क्या यह अच्छी बात है ? रिचर्ड पर कुछ भी असर नहीं होता। वह जवाब देता, "क्या यह अच्छी बात होगी कि ये लोग मिलकर मेरे खिलाफ लड़े, मेरा खून करे ?....कैसे रहे अगर इस वक्त ये आवाजें मेरे घर के बाहर उठ रही हो, और ये लोग मेरा खून बहाने के लिए संगीने उठाए बाहर खड़े हो ?"[11]

रिचर्ड के अनुसार सर्विस में मानवीय मूल्यों का कोई महत्त्व नहीं है, यहाँ सिर्फ शासकीय मूल्यों का महत्त्व होता है। उसमें एक भोड़ा आदर्शवाद है, वह सिविल सर्विस का नाम लिखता है और खुद को अलग रखता है। हम पढ़कर कह सकते है। इन दंगों के पीछे अंग्रेजों की "डिवाइड एण्ड रूल" की पालिसी काम करती थी।

इस उपन्यास में साम्प्रदायिकता की शुरूआत गरीब चमार नत्थू के एक बन्द कमरे में पैसे के लिए सुअर मारने से होती है। इस सुअर की लाश मस्जिद की सीढ़ी पर फेंक देते हैं। तुरन्त मुसलमान भी हिंदू गाय को पवित्र मानते हैं वह गाय को मारकर मंन्दिर के सामने फेंक देते हैं।

इन दो घटनाओं के कारण एक तरफ वानप्रस्थीजी हिन्दुओं को भड़काते

हैं। उधर मुल्ला-मौलवी, गोलडा, पीर आदि मुसलमानों को उकसाते हैं। उन सबके के कारण मंदिर, मस्जिदों और गुरूद्वारे में लड़ाई का झगड़ों का इन्तजाम करते हैं। दोनो तरफ तैयारियाँ शुरू हो जाती है। नेता लोग कमिटी मेन लोग देवव्रत जैसे अपने युवकों को रणवीर, धर्मदेव, बोधराज, इंद्र, शम्भू आदि युवकों को तालीम देना शुरू कर देते हैं। "मुर्गी को कटवाकर हिंसा के पाठ पढ़ाए जाते हैं। तेल की कडाहियाँ चढाई जाती हैं।"[12] देवव्रत और काँग्रेसी नेता इनके कोशिशों के कारण साम्प्रदायिक भावनाएँ भड़कती जाती है। मण्डी में आग लगा दी जाती है, मंदिर का घडियाल ठीक करवा दिया जाता है। उधर मस्जिद में भी जोक-दर-जोक लोगों का जुलूम बढ़ता जाता है। मंदिर, मस्जिद और गुरूद्वारे साम्प्रदायिकता के केन्द्र बन जाते हैं।

जरनेल जैसे कुछ देशभक्त भी इस उपन्यास में हैं। वह गांधीवादी है, वह सभी लोगों को कहता है हम भाई-भाई हैं। हमारा दुश्मन अंग्रेज ब्रिटिश शासन है। वह ही हमे लड़ाता है, हमे इनके बातों में नही आना चाहिए। वह कहता है, "गांधीजी का फर्मान है कि पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा। मैं भी कहता हूँ पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा। हम एक है, भाई-भाई है, हम मिलकर रहेंगे।।.....।"[13] उनके बातें खत्म होने से पहले ही कोई उसे लाठी से मारकर खोपडी फोड़ दी जाती है। वह हमेशा के लिए सो जाता है। उनके तरह इब्राहिम, इत्रफरोश भी मारा जाता है। वह भी देशभक्त ही था। हिन्दु और मुस्लिम आमने सामने नहीं आते निर्दोष, गरीब कई बार बूढ़े की हत्या इन धार्मिकता के कारण होती है।

दंगा फिसाद ठंडा पड जाने पर रिलीफ कमेटी का कार्यकर्ता रजिस्टर लेकर आता है, वह सिर्फ आँकडें माँगता है "हमे आँकेडेचाहिए, केवल आँकडे। आप समझते क्यों नहीं ? आप लम्बी हाँकने लगते हैं, सारी रामकहानी सुनाने लगते हैं, कितना माली नुकसान हुआ।"[14] कार्यकर्ता रिचर्ड देवदत्त से कहता है, "अमीर कितने मरे गरीब कितने मरे" लेखक ने इससे उपन्यास में स्पष्ट किया है कि साम्प्रदायिक दंगों में गरीब मरते हैं, इनमें हिंदू या मुसलमान या सिक्ख इन सब में अधिकांश गरीब ही मारे जाते हैं। शाहनवाज, रईस, मुसलमान, रघुनाथ

जैसे अमीर और हिंदू तेजासिंह मुखिया सरदार इन सारे दंगों से सहिसलामत बचकर निकलते हैं। मरते हैं ये गरीब, निर्दोष जनसामान्य लोग।

साम्प्रदायिक समस्या के बारे में "तसम" को हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान है। लेखक साम्प्रदायिक दंगें और उनके कारण खड़ी हुई समस्याओं का विश्लेषण बड़ा ही सूक्ष्म करते हैं। द्वितीय खण्ड में फैलते हुए इस कौमी जहर की भयंकर विद्रूप विभिषिकाओं का वर्णन किया है। पहले शहर में वह साम्प्रदायिकता का जहर फैला हुआ था, बाद में गाँवो में भी फैलता है। सैयदपूर, खानपूर, ढोक इलाही, नुरपुर, आदि गाँवों में साम्प्रदायिकता की आग फैलने लगती है। हरनामसिंह और बन्तो जैसे कुटुंब घर से बेघर होते हैं। इकबालसिंह जैसे गरीब लोगों से जो हिंदू है, जो मुस्लिम कुछ सिर्फ इन्सान के रूप में जिनेवाले लोगों का धर्म परिवर्तन करवाया जाता है और उन पर जबरदस्ती की जाती है, उनके मुँह में माँस ठाँसा जाता है। दोनो तरफ के लोग अपने मस्जिद और गुरूद्वार में आकर अपने अपने देवता के नारे लगाते हैं।

मुस्लिम अल्लाह ओ-अकबर, और सतसिरी अकाल के नारों से आकाश भी हिल उठता है। कुछ समाजसेवी लोग सोहनसिंह जैसे मेल कराने का प्रयत्न करते हैं और ये दोनों भी अपनी अपनी जातियों से अपमानित होते हैं। बलदेवसिंह बूढे लुहार को उनके बिना कुछ अपराध से उसे मरवाता है। क्योंकि वह सोचता है उनकी बूढी माँ को उन्होंने ही मार डाला होगा। जिसने उनकी माँ को मारा उन्हें मुँह देने की ताकद उसमें नहीं है और वह उस गरीब असहाय बूढ़े की हत्या कर देता है। वहाँ पर इतना आतंक हो रहा था कि देखने की भी शक्ति उनके आँखों में नहीं इतनी भयंकर घटनाएँ हो रही थी। माँ-बहनों की इज्जत दिन में लूटी जाती है। मूर्दे के साथ भी बलात्कार किया जाता है। कईऔरते इज्जत बचाने के लिए कुएँ में कूदकर आत्महत्या कर लेती हैं। इस प्रकार मानव ही मानव के साथ राक्षसी कृत्य कर रहा था। प्राणियों को भी लज्जित करेगा यह दृश्य इतनी भयानक घटनाएँ उन दिनों में घटित हुई। इन घटनाओं में अंग्रेजों की कूटनीति ही इस विभेद का प्रमुख कारण है। फिसादों को हमेशा बढ़ावा दिया है।

इतने बड़े दंगे-दोफे भयानक स्थिति में भी कही इन्सानों में इन्सानियत भी दिखाई देती है। हरनामसिंह ओर बन्तो ये दोनों हिंदू हैं। इन्हें मुस्लिम औरत राजो इन बेसहारों को सहारा देती है। राजो का लड़का खून-खच्चखाला है, लेकिन वह सहारे में रहनेवालों पर हाथ नहीं उठाता। इस तरह कुछ लोगों में अभी तक इन्सानियत है, इसका यह उदाहरण मिलता है। इस प्रकार लेखक ने भीड़ के मनोविज्ञान का उदाहरण दिया है।

राजो का लड़का कहता है, "भीड में खोकर मारना-लूटना एक बात है, पर अकेले में किसी परिचित पर वार करना दुश्वारकार्य है।"[15]

इसप्रकार आखरी वक्त फिसाद प्रशासन द्वारा दबा दिया जाता है। आँकडे इकट्ठे किये जाते है, कितने लोगों की मृत्यू हुई, कितने लोगों ने आत्महत्या की, सबकी संख्या इकट्ठा करते और कमिश्नर रिचर्ड अंग्रेज बहादुर की प्रशंसा होती है। गरीब चमार नत्थू डर कर मर जाता है, क्योंकि उसका सुअर मारनेवाला कृत्य प्रकाश में आयेगा इस कारण उसकी मृत्यू। पर्दे के पीछे रहकर नत्थू की तरह लोगों को आगे बढ़ानेवाला मुरादअली सहिसलामत है, जिसने सूअर मस्जिद के सामने फिकवाकर दंगा-फिसाद की शुरूआत की थी।

भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास में लिखा है, "भारत में हिंदू-मुस्लिम समस्या एक युग पुरानी समस्या है और इसके दानवी शिकंजे में आजतक हमारे देश की मुक्ति नहीं हुई है। आज़ादी के पूर्व जैसे ब्रिटिशों में कूटनीति को अपना कर हिंदू-मुसलमानों में फसादों को बढ़ावा दिया, उसी तरह आज़ादी के बाद भी अपने ही देश के कुछ राजनीतिक दल इसी भेदनीति का घृणित उपयोग कर रहे हैं और इस सारी प्रक्रिया में जो तबाही होती है उसका शिकार बनते हैं वे निर्दोष लोग जो न हिंदू है न मुसलमान बल्कि सिर्फ इन्सान हैं।"[16]

इसप्रकार "तमस" उपन्यास में भीष्म साहनी ने साम्प्रदायिकता की समस्या और उससे संबंधित विचारधारात्मक छोटे छोटे सन्दर्भों को नये और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ स्पष्ट करते हैं। इस उपन्यास में आज़ादी के पहले भड़काई साम्प्रदायिक समस्या का चित्रण है।

निष्कर्ष

"तमस" की कथावस्तु समस्यामूलक है। भीष्म साहनी ने दो सम्प्रदायों के बीच के तनाव को प्रस्तुत किया है। लेखक ने इस उपन्यास की समस्या को अलग ढंग से लिया है, उन्होंने राजनीति धर्म और सम्प्रदाय से एकदम अलग शुध्द मानवीय धरातल से देखा है। देवव्रत के प्रति लेखक ने कहा है, वे अपनी तटस्थता को पुर्णतः नहीं निभा सके। किंतु कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं के प्रति लेखक पूर्णतः तटस्थ नहीं रह सके। इसमें यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि कम्युनिस्ट पार्टी विभाजन के विरोध में नहीं थी।

साम्प्रदायिक समस्या पर अनेक उपन्यास लिखे गए हैं, लेकिन पढ़ने से यह बात महसूस होती है कि "तमस" इन सब में विशिष्ट उपन्यास है। लेखक ने इस उपन्यास की रचना में आम आदमी की दृष्टि से देखने की कोशिश की है। "मजहबी जनून और नफरत के इस माहौल में इन्सानियत की कही कोई एक पतली-सी लकीरे है अथवा वह भी लुप्त हो गई है।"[17]

लेखक ने इस उपन्यास में साम्प्रदायिक समस्या के मूल में जाकर यही खोज की है कि इस तनावपूर्ण वातावरण और नफरत में सब लोगों ने पाशविकता का रूप लिया है या किसी मानव में मानवीयता की थोडीसी रेखा भी बाकी है या नही ? वह मानवीयता और इन्सानियत को अपने पास रखनेवाले भी लोग थे वे हैं, जैसे शाहनवाज, राजो, बख्शी आदि में यह मानवीयता की रेखा लेखक को और पाठकों को दिखाई देती है।

साम्प्रदायिकता हमारे इतिहास एवं वर्तमान जीवन की त्रासदी है। देश की स्वतंत्रता के 46 वर्ष बाद भी भारत के नागरिक साम्प्रदायिकता को खत्म नहीं कर सके हैं। आज भी देश के भीतर साम्प्रदायिक तक्तों की खतरनाक भूमिका चल रही है। आम जनता मानवी दृष्टिकोण की अपेक्षा मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, तक ही अपना ध्यान सीमित रखता है। जिससे भारत की एकता विभाजित होती जा रही है। धर्म के नाम पर लोग आपस में झगड़ते हैं।

भारत में सभी सम्प्रदायों के लोग रहते हैं जो सभी एक ही नस्ल के लोग हैं। नाक नक्श सबके एक जैसे है। उनका रंग, रूप, वेश, रहन-सहन, भाव विचार और जीवन दर्शन एक ही जैसा है। खून, भाषा, संस्कृति, मिलाप इसमें है। द्रविडी आर्य, मंगोलियन आदि जातियों का संकर इसमें पाया जाता है। लेकिन वे सभी लोग आज अपना इतिहास भूल गये हैं। वे अधिक से अनुदारता का परिचय देते हैं। जिसकी वजह से उनमें संघर्ष होता रहता है। परस्पर घृणा, द्वेष, स्वार्थ, अहंकार से ग्रस्त बने हुए हैं।

"तमस" इस साम्प्रदायिक हादसे की कहानी है। जिसमें भीष्म साहनीजी ने घटनाओं का अंकन किया है। इसका मूल स्वर मानवीय करूणा है। ऐसे दंगों से मानवता की हत्या होती है। अखंण्डता का स्वप्न खंण्ड-खंण्ड होकर बिखर जाता है। फूट और अवसरवादी तत्वों को बढ़ावा मिलता जिससे क्षुद्र स्वार्थ, अविवेक, भेदिनीति, अलगाववाद, मजहबी, अंधता प्रान्तीयता, देशद्रोहिता ऐसे तत्व जो हिंसक प्रवृत्तियों को प्रेरित कर आतंक एवं राष्ट्रिय असुरक्षा उत्पन्न करते हैं।

4.5. विभाजन की समस्या

प्रस्तावना

हिन्दी के अनेक उपन्यासकारों ने और भीष्म साहनीजी ने अपने उपन्यास "तमस" में देश के विभाजन के समय की राजनीतिकता और साम्प्रदायिकता दंगों का नंगा नाच हुआ इसे लेकर हिन्दी के अनेक लेखकों ने गहराई के संवेदना परक उपन्यासों की रचना की गई है। "तमस" भी भीषण साम्प्रदायिक दंगों को प्रस्तुत करनेवाला महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। साम्प्रदायिकता के कारण समाज में हर एक व्यक्ति की जिंदगी में अंधेरा ही अंधेरा है, प्रत्येक व्यक्ति की जिंदगी और हर एक कुटुंब की उद्‌ध्वस्तता को एक मूक व्यक्ति की तरह एक-दूसरे के तरफ देखते हैं, इसके सिवा कुछ भी उनके हाथ में नहीं है। इन सबकी खुलकर बाते भीष्म साहनी के "तमस" इस उपन्यास में हुई है।

साम्प्रदायिकता का मूल कारण है, द्विराष्ट्रवाद के सिध्दान्त और भारत-विभाजन, साम्प्रदायिक वैमनस्य की जड़े भारतीय जनता में इतनी गहराई तक पहुँची है कि आज तक उसका स्पोट दिसाई देता है। धार्मिकता का भी जहर आज भी हमारे देश में फैला हुआ दिसाई देता है। आज भी हमारे देश में उस वक्त की तरह आज भी धर्मान्धता और साम्प्रदायिकता चल रही है, इसे रोकने की कोशिश कुछ इने-गिने लोग करते हैं लेकिन ज्यादातर लोग उसे बढ़ा रहे हैं। कुछ संघटनाएँ भी तैयार की है, यह संघटना कम करने के बजाय इसे और भी गहरा रूप दे रही है।

विभाजन के बारे हिंदू-मुस्लिम इन दोनों में वाद चल रहा था और उपर पंजाब, बंगाल, आसाम प्रांत की माँग जिन्नसाहब की थी। इस तरह पाकिस्तान की माँग मुस्लिम कर रहे थे वहाँ ज्यादा मुस्लिम थे, हिंदुओं की संख्या कम थी। इन दोनों की माँग हिंदुओं का पाकिस्तान माँगने के पीछे मतलब था कि स्वतंत्र भारत में हिंदुओं की संख्या मुस्लिमों से ज्यांदा है, वे अल्पसंख्य मुस्लिमों पर अपना हक मुताबित करेंगे, दबाव रखेंगे। लेकिन हिंदुस्थान और पाकिस्तान दो भाग होने से जातियों के प्रश्न निर्माण होने लगे। इसप्रकार चुनाव हुए मुस्लिम लीग ने साम्प्रदायिक दंगों का आश्रय लिया इसका कारण था कि मुस्लिमों का कहना था कि काँग्रेस को हिंदुओं की संख्या माननी चाहिए और मुस्लिमों को मुसलमानो की। इसके लिए दंगों का रूप लिया इन दोनों में हत्याकांण्ड होने लगे। इसके विभाजन के पीछे ब्रिटीशों की कूटनीति थी। इसप्रकार दो राष्ट्रों का निर्माण हुआ।

"तमस" उपन्यास मे इन विभाजन के वक्त साम्प्रदायिक दंगों का चित्रण किया है। इस उपन्यास में दंगों का क्षेत्र पंजाब का है। भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास में न ही सिर्फ शहरों को लिया है, तो उन्होनें छोटे-छोटे ग्रामों को भी अपने उपन्यास में समेटा है, कुछ ग्राम ऐसे हैं, जो विभाजन के कारण घृणा और द्वेष में समाविष्ट होकर उग्र हो गये हैं।

विभाजन समस्या का स्वरूप

भारत विभाजन स्थूल रूप में एक मानवीय शोकान्तिका है। जिससे लोगों को मानसिक यातनाएँ भुगतनी पड़ी। यह दुर्घटना केवल राजनीति या किसी एक विशिष्ट वर्ग तक सीमित नहीं है। इसमें लाखों, करोड़ो लोगों की जिंदगी उद्ध्वस्त हुई है। यह बँटवारा अचानक, अप्रत्यक्ष रूप में हुआ था। क्योंकि आज़ादी के पूर्व किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि हिन्दुस्थान और पाकिस्तान दो हिस्सों में बँटवारा होगा।

विभाजन की शोकान्तिका को समझाने के लिए उसकी राजनीतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक पृष्ठभूमि को देखना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। 1857 के विद्रोह ने भारतीय जनता की राजनीतिक चेतना विकसित होती गयी। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोधी किया। अंग्रेज भारतीय जनता के हितों की उपेक्षा करते थे। अंग्रेज अधिकारियों का भारतीय जनता के प्रति व्यवहार अमानवीय था। ब्रिटिश कानून केवल उनके स्वार्थ के लिए बनवाये गए थे। इसमें भारतीय जनता का कोई मूल्य नहीं था। इनकी हत्या करना एक साधारण कृत्य बन गया था। राष्ट्र के विचारक एंवं सुधारवादी लोग शोषण एवं अत्याचारों से क्रोधित थे।

15 अगस्त 1947 को भारत विभाजित हुआ। जिन भयंकर साम्प्रदायिक स्थितियों से बचने के लिए विभाजन हुआ वे साम्प्रदायिक दंगे तेज बनते गये। अमानवीय हत्याकांण्ड होते रहे। जो नर संहार हुआ वह भारतीय इतिहास की करूण गाथा थी।

जिस दिन से अंग्रेजी शासन हमारे हिन्दुस्थान में आयी उस दिन से "फूट डालो और शासन करो" इस नीति को अपनाया। ब्रिटीश सरकार ने इस नीति को अपना हाथियार बनवाकर शासन किया। इसमें एक अफसर कमिश्नर रिचर्ड के कथन से पता चलता है - "हुकूमत करनेवाले यह नहीं देखते कि प्रजा में कौनसी समानता पाई जाती है, उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में आती है कि वे किन-किन बातों में एक-दूसरे से अलग हैं।"[18]

हिन्दु-मुस्लिम दंगों का बीज बोनेवाला मुरादअली कमिटी का करिन्दा है और साथ ही मुस्लीम लीग का कार्यकर्ता भी है। वह हिंदु-मुस्लिम दोनों में साम्प्रदायिकता की दीवार खड़ी करने में जरा भी संकोचते नहीं। मुराद अली अंग्रेजों के कहने पर नत्थू से सुअर मरवाकर एक मस्जिद की सीढ़ियों पर फिंकवा देता है। इस घटना के साथ ही दंगों की शुरूआत होती है।

साम्प्रदायिकता का जहर सभी नगरों में फैला हुआ था। दंगों का रूप गहरा होने से अंग्रेजी कमिश्नर रिचर्ड आम जनता और राजनीति के दलों के नेताओं को आश्वासन देता है। शांति का झूठा आश्वासन और उसके पीछे हत्या, लूटपाट और कर्फ्यू इससे स्पष्ट होता है कि लेखक ने नेताओं की स्वार्थी भूमिका स्पष्ट की है। कुछ इने-गिने मीरदाद, देवदत्त जैसे देशप्रेमी दंगों को रोकने का प्रयास करते हैं लेकिन इन दंगाई और शोर में इनके स्वर दबकर रह जाते हैं। "विभाजन से मानवीय सम्बन्धों में जो अन्तर पड़ता जा रहा था, उसे भीष्म साहनी ने बड़ी बारिकी से देखा है। क्योंकि बँटवारे के दरमियान नफरत एक ऐसे पैमाने पर पहुँच गयी थी, जहाँ न सिर्फ जमीन की बाँट थी, मानवी सम्बन्धों के टूटनेसत्म् हो जाने की तिड़कन और टूटन भी थी।"[19]

इसप्रकार "तमस" में भीष्म साहनी ने साम्प्रदायिकता के अमानवीय पहलू को व्यापक रूप में चित्रित किया है। साम्प्रदायिकता की अमानवीयता ने न सिर्फ जमीन का ही बँटवारा किया बल्कि मानवीय सम्बन्धों को भी तोड़ डाला है। वात्सल्य का गला घोंट दिया है। फिसाद के वक्त पंडित ब्राम्हण की जवान लड़की को कोई उठाकर ले गया है। फिसाद खत्म होने के बाद इनसे कहा जाता है कि इनकी बेटी मिली है, उसे वे ले जाए। परंतु ब्राम्हण पंडित सनातनी वृत्ति का शिकार होकर बेटी लेने को यह इन्कार करते हैं, और कहते हैं, "अब हमारे पास आकर क्या करेगी जी ? बुरी वस्तु तो उसके मुँह में उन्होंने पहले से ही डाल दी होगी।"[20] माँ-बाप इतने कठोर, अमानवीय हो सकते हैं, इस पर शायद ही कोई विश्वास रखें। धार्मिकता कट्टरता के नाम पर हिंदुओं ने अपने खुद के खून को नकारा है।

लेखक ने उजड़े हुए ग्रामीण नर-नारियों को बच्चों के साथ कुएँ में कूदकर जान दे देना इस तरह की अनेक घटनाएँ अपनी आँखों से देखी । लेखक तटस्थता से इन स्थितियों, घटनाओं और व्यक्तियों को चित्रित करते हैं। इस उपन्यास में साहनी अपने लक्ष्य को पाने में सफल रहे है। इन सब बातों से स्पष्ट है कि भारत-विभाजन का पूरा फायदा साम्प्रदायिक शक्तियों को ही मिला है।

३.7. हिन्दी साहित्य में विभाजन की समस्या

साहित्य समाज को दर्पन माना जाता है। उसमें विविभन्न परिस्थिति से उत्पन्न विचार, भावना, अन्तःप्रेरणा मानवीय संवेदना प्रतिबिम्बित होती है। लेखक समाज का जीवन-चित्र इसमें उद्‌घाटित करता है। साथ ही राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, परिस्थितियाँ भी सहायक होती है। युग की प्रतिछाया ही साहित्य है, जिनमें साहित्यकार अपने विचारों को उद्‌घाटित करता है। सामाजिक समस्याओं का गंभीर उद्‌घाटन भी किया जाता है। मानव संघर्ष की गाथा चित्रित की जाती है। उपन्यासकार का अनुभव क्षेत्र जितना विशाल और विस्तृत होता है उतना उपन्यास सफल बनता है।

साहित्यकार इतिहास को आधुनिक विचारों के आलोक में देखकर साहित्य का निर्माण करता है। हिन्दी साहित्य के महान उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द है। उन्होंने सामाजिक परंपरा का सीधा सरल चित्रण किया है।

यशपालजी ने भी अपने "झूठा सच" इस उपन्यास में भारत-विभाजन की पूर्वपीठिका विभाजन के वक्त की परिस्थिति और उत्तरप्रभाव का बहुत विशद और जीवन्त चित्र उभारा है। उन्होंने विभाजन के समय की घटनाएँ सिर्फ इतिहास में सीमित होकर खत्म होनेवाली घटनाएँ नहीं हैं। उन्होंने पंजाब, हिन्दुस्थान, दोनों देशो की जीवन व्यवस्था और जीवन मूल्यों को प्रभावित किया है। यशपालजी ने राष्ट्रिय प्रक्रिया करते समय मानसिकता के स्तरों को खूबी से उद्‌घाटित किया है।

इस उपन्यास में राजनीतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टिकोण विशेष महत्त्वपूर्ण है। 1947 की क्रान्ति से देश की स्थिति हिंदू-मुस्लिम संबंध, उनका रहन-सहन, देश का निर्माण तथा उन्नति, जनता की आशाएँ आदि का समग्र चित्रण इसमें है। मुस्लिम लीग के षड़यंत्र हिंदू-मुस्लिम इन दोनों में साम्प्रदायिक झगड़े उनके नारे छुरेबाजी, आगजनी, हड़ताल, कत्ल, जुलूस, अफसरों की नाइन्साफी, इन सभी बातों का वर्णन इस उपन्यास में पढकर "झूठा सच" उस युग का जिवंत चित्र प्रस्तुत करता है।

डॉ॰राही मासूम रजा का "आधा गाँव" इस उपन्यास की तरह अनेक हिन्दी उपन्यास लिखे लेकिन विभाजन और पाकिस्तान को लेकर वास्तविकता के इस पहलू को लेकर केवल राही ही पकड़ सके हैं।

उनके उपन्यास में विभाजन की काली छाया को मँडराते गये हैं, इस उपन्यास की कहानी जो-जो आगे बढ़ती है तो यह काली छाया फैलती गयी है। लेखक ने कहा है, "यह विभाजन देश के नक्शे पर खींची गई भारत-पाकिस्तान की विभाजन रेखा ही नहीं, बल्कि वह रेखा है, जो पहले काग़ज पर फिर जमीन पर, अन्ततः पूरे देश के जीवन पर खींच गई और जिसने हिन्दुओं को अधिक हिन्दू और मुसलमानों को अधिक मुसलमान बना दिया। जिसने माँ-बाप से बेटे बहनों से भाई पत्नियों से पति ही नहीं अलग किए बल्कि इन्सान को जमीन से तोड़ दिया, इन्सान को इन्सान से तोड़ दिया।"[21]

इसप्रकार उन्होंने अपने उपन्यास में विभाजन समस्या को केंद्र में रखकर उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि विभाजन को लेकर जो आज़ादी मिली वह हिन्दुस्थान की मुस्लिम आबादी के लिए कितना बड़ा हादसा थी, यह स्पष्ट करने की सफलता के साथ कोशिश की है।

भारत-पाक विभाजन की समस्या को लेकर लिखा गया कमेलेश्वर का "लौटे हुए मुसाफिर" एक उपन्यास है। एक छोटीसी बस्ती के सूक्ष्म परिवर्तन का चित्रण इसमें प्रभावपूर्ण ढंग से किया है। करीब सो वर्ष का इतिहास इसमें अंकित है। 1851 से 1961-62 तक का चित्रण एवं परिवर्तन लघु उपन्यास में किया है।

धर्म, साम्प्रदायिकता स्वार्थान्धता, नफरत, द्वेष, घृणा, आगजनी, मारकाट, लूटपाट का चित्रण कर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कमलेश्वरजी ने किया है। "मनुष्य जिस मिट्टी में जन्म लेता है, जिस वातावरण में बड़ा होता है, उसे वह कभी भी भूल नहीं पाता। जिस नयी बस्ती में वह जाता है, वहाँ कभी भी सुख से नहीं रह पाता। एक अज्ञात-सा आकर्षण अपने "मूलस्थान" के प्रति बना ही रहता है।"[22] यही कारण है कि कमलेश्वर के मुसाफिर अन्त में लौटने लगते हैं। "तमस" में भीष्मजी ने विशुध्द विभाजन और उससे उत्पन्न द्वेष एवं अलगाव का प्रभावपूर्ण चित्रण किया है।

"देश की हत्या" यह गुरूदत्त का विभाजन पर आधारित उपन्यास है। इसमें भारतीय मुसलमानों की कूटनीति एवं विषैले कार्य व्यवहार का चित्रण है। भारतीय मुसलमान, भारतीय नागरिकता का उपभोग करते हुए भी अपने को पाक-नागरिक अनुभव करता है। हमारी काँग्रेस सरकार उनके वोट प्राप्त करने के लिए उनका ही समर्थन करती है। उपन्यासकार ने मुसलमानों की नीति पर टीका की है। एक मुसलमान पात्र अपनी जनता को भड़काने की कोशिश करता है। हिंदू स्त्रियों के साथ संभोग चित्रण यौन तथा भूख के दर्शन करा दिए हैं।

"तमस" में हर घटना संतुलित है। उसमें अश्लीलता नहीं है।

"और इन्सान मर गया" यह रामानन्द सागरजी का उपन्यास भारत विभाजन और उनसे उत्पन्न दंगे फसाद की भीषणता को चित्रित करता है इसमें क्रूरता, करूणा, एवं वैफल्य का दर्दभरा चित्रण कर मानवता एवं मानव की हत्या का करूण चित्रण किया है। लेकिन इसमें निराशा एवं वैफल्य के वर्णन की अति होने के कारण कुछ प्रसंग उबा देनेवाले हैं। "तमस" में इसीप्रकार की कोई भी घटना नहीं है।

इस प्रकार राष्ट्रवादी लेखक की भाँति "तमस" लिखा है और सहिष्णुता की दृष्टि से अंग्रेज नीति की कटू आलोचना की है। धर्म और सम्प्रदायों की अर्थहीनता को स्पष्ट कर सर्वधर्म समभाव का स्वीकार किया है। इसी कारण उनकी रचना श्रेष्ठ कोटि की बन गयी है।

३.४. निष्कर्ष

विभाजन की घटना है, वह हमारे देश को काला कलंक है। हिन्दी साहित्य में विभाजन पर उपन्यास लिखे वह पढ़ने से इस घटनाओं का चित्र आज भी आँखों के सामने खड़ा होता है। "झूठा सच" से लेकर "तमस" तक इन उपन्यासों में विभाजन की समस्या ने ही हिंदू-मुस्लिमों के बीच दीवार खड़ी कर दी। इन दो जातियों में साम्प्रदायिकता की तीव्रता विभाजन की घटना ने बहुत गहरा रूप ले लिया। हिंदू-मुस्लिम एक दूसरे के साथ एक ही परिवार में रहते थे, एक दूसरे से चाहते थे। उन दोनों में दो भाई जैसे सम्बन्ध थे। अंग्रेजी शासन के वक्त भी ऐसा बर्ताव था। एक दूसरे के साथ अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध था। लेकिन विभाजन की घटना के बाद सारा वातावरण बदल गया। इस बदलते चित्र हिन्दी साहित्य में मिलते हैं।

३.५. भीष्म साहनी के उपन्यासों में चित्रित विभाजन की समस्या

भारत पाकिस्तान विभाजन की समस्या को लेकर हिन्दी में ही नहीं तो भारत के सभी भाषाओं में विभाजन के बारे में काफि लिखा हुआ मिलता है। विभाजन यह घटना ऐसी थी कि सामान्य व्यक्ति के दिल में भी यह पढ़ने से हलचल सी मच जाती है। धर्म के नाम पर जो अत्याचार हुए इतने भयानक थे कि मनुष्य जब मनुष्यता छोड़ देता है तो वह एखाद पशु से भी अत्यंत क्रूर हो जाता है। सन 1946 से 1950 तक यह समस्या देश में जारी रही इस समस्या को लेकर पंजाब, उर्दू, हिन्दी, बंगाली, इन सभी भाषाओं में श्रेष्ठ रचनाएँ लिखी है। इन भाषाओं के जिन साहित्यकारों ने रचनाएँ की है उन सभी साहित्यकारों ने इस विभाजन दर्द को भोगा है, उन्होने खुद मनुष्य की पशुता से भी बढ़कर व्यवहार को अपने आँखों से देखा है और पशुता का व्यवहार करनेवाले मनुष्य के पीछे कौनसी शक्ति है। इसका वर्णन भीष्म साहनी और हिन्दी साहित्यकार यशपाल, कमलेश्वर, राही मासूम रजा, इस तरह के अनेक लेखकों की विभाजन समस्या, साम्प्रदायिकता दंगे-दोफें हिंदू-मुस्लिम समस्या इसका स्पष्ट वर्णन मिलता है।

भीष्म साहनी का "तमस" भयानक एक षडयंत्र है, उसमें पिसनेवाले लोगों की दर्दनाक कहानी इस उपन्यास में है। उन्होंने इसमें कल्पना कम और विभाजन के वक्त जो लोगों के साथ घटनाएँ घटी, उनका स्पष्ट रूप से वर्णन है। देश विभाजन के पूर्व और बाद में भी साम्प्रदायिकता दंगे हुए इनमें पंजाब, नोआखाली, कलकत्ता ये इस आग में जले हमारे देश को आज़ादी मिली लेकिन देश दो भागों में बाँट लिया भारत और पाकिस्तान बाटने के कारण अनेक लोग घर से बेघर हुए। कितने लोग हिंसा में बली पड़े लेखक ने दो धर्म में बीज बोने की शुरूआत किस प्रकार हुई इसका वर्णन किया है। इस्लाम धर्म में सुअर को अपवित्र और हेय समझा जाता है और हिंदू गाय को पवित्र मानते हैं। हिंदू-शास्त्र गोहत्या को ब्रम्हहत्या के समान पाप कहते हैं। इसी के आधार पर हिन्दू साम्प्रदायिकतावादी नेता गोहत्या पर पाबंदी की माँग करते हैं। इसी धार्मिक कट्टरता की भावना के आधार पर भीष्म साहनी ने "तमस" साम्प्रदायिक अंधकार का बीज बोया है। इस प्रकार लेखक ने धार्मिक भावनाओं का वर्णन अपने उपन्यास में किया है।

भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास में यह बात स्पष्ट है, उन्होंने विभाजन का मूल आधार "एक दूसरे के प्रति नफरत की भावना पैदा होना यह माना है। "तमस" में जो समस्याएँ है, वह नवीन और महत्त्वपूर्ण भी हैं। मनुष्य और मनुष्य उनके बीच जो मानवीय सम्बन्ध हैं, उसे केन्द्र में रखकर समस्या को देखा है। विभाजन के नाम पर सामान्य लोगों का शोषण हुआ है, इसका वर्णन उन्होंने किया है। विभाजन समस्या के साथ आर्थिक समस्या भी उभर आयी, विभाजन का फायदा सिर्फ अमीर सदन लोगों को हुआ। गरीब दीन-दलित लोगों को विभाजन के बाद और उससे पहले इन लोगों में कुछ भी फर्क नहीं दिखाई देता यह स्पष्ट किया है। जनसामान्य विभाजन अथवा अन्य किसी से भी इनका कोई मतलब नहीं, वे आज भी अपनी छोटी-छोटी समस्याओं से जूझ रहे हैं। जब कभी दंगो या नफरत की आग फैलती है, तो उसमें आम आदमी की मृत्यू होती है। "तमस" उपन्यास का मजदूर पात्र कहता है - "आज़ादी पर हमे क्या, हम पहले भी बोझ ढोते हैं, आज़ादी के बाद भी बोझ ढोयंगे।"[22]

इस उपन्यास की शुरूआत भी आम आदमी या सामान्य व्यक्ति द्वारा हुई है।

विभाजन की शुरूआत कहाँ से शुरू हुई इसका वर्णन "तमस" में किया है। लॉर्ड माऊंट बॅटन इस विभाजन का वातावरण निर्माण करने के लिए प्रयत्न शील थे। उन्होंने बंगाल और पंजाब दो प्रान्तो का विभाजन किया लेकिन उनकी यह योजना पंजाब विभाजन के मुस्लिम लीग अस्वीकार कर चुके थे। इसका परिणाम इस कमेटी के लोग देख रहे थे। दंगों में अमीर लोगों को कम और आम आदमी मजदूर गरीब इन लोगों को ज्यादा से ज्यादा परेशानी उठानी पड़ी। लेखक ने इस उपन्यास में छः शक्तियों का वर्णन किया है। पहले अंग्रेज, मुस्लिम लीग, आर्य-समाज, कम्युनिस्ट, काँग्रेस, सिक्ख, इसतरह की यह शक्तियाँ हैं।

1· **अंग्रेजी सरकार**

यह ब्रिटीश सरकार दो धर्मों के तनाव जितना बढ़ सके उतना बढ़ाती है। हिंदू-मुस्लिम दो सम्प्रदाय को लड़ाने में वे खुद सुरक्षित का अनुभव करते थे। इन लोगों को हिंदू-मुस्लिम इन दोनों में समानता के बदले विघटन में ही ज्यादा दिलचस्पी है। ब्रिटीश इन दोने के दंगे जितने बढ़ सके उतने बढ़ाते हैं। इन्हें सिर्फ देश में असंतोष फैलाना है। वह सिर्फ स्वार्थ देखती थी। भारतीय जनता के हितों की उन्हें बिल्कुल चिंता नहीं। काफि दंगा, लड़ाई, झगड़े, जाल-पोल हो जाने के बाद ये लोगों में समझौता कराने का नाटक करते थे। अंग्रेजों ने भारत मे राष्ट्रिय भावना को कमजोर करने के लिए साम्प्रदीयक भावना का पोषण किया। हिंदु-मुसलमान आपस में बैर रखने लगे, हिन्दुस्थान-पाकिस्तान की माँग होने लगी। राजनीति ने देश का विभाजन कर हिंदुस्थान-पाकिस्तान अलग अलग बनवाया लेकिन इसका परिणाम इन्सान-इन्सानों में दीवार खड़ी कर दी।

2· **हिंदू-मुस्लिम लीग की समस्या**

मुस्लिम लीग अपने सम्प्रदाय का कार्य कर रहे थे, हिंदू अपने सम्प्रदाय का कार्य कर रहे थे। आर्य समाज के समान ही मुस्लिम लीग भी द्विराष्ट्रवाद के

सिध्दान्त का प्रचार कर हिंदू-मुसलमानों में अलगाव को बढ़ावा दे रही थी। "पंजाब में मुस्लिम गार्डस की स्थापना हो चुकी थी। अलगाव बढ़ाना नफरत के जहर को फैलाना, यही लीग का कार्यथा।"[23] इन दोनों का बीज बोनेवाला मुरादअली कमिटी का कार्यकर्ता मुस्लिम लीग का है। वह ही सुअर की हत्या करवाकर मस्जिद की सीढ़ियों पर फिकवा देता है। इस मुरादअली के षडयंत्र के कारण ही सारे शहर में दंगे की शुरूआत होती है। साम्प्रदायिक दंगे होने से मुस्लिम हिंदू धर्मगुरू अपने भाषणों द्वारा अलगाव को बढ़ाते जाते हैं। कॉंग्रेस की प्रभात फेरी के समय मुस्लिम लीग का कार्यकर्ता बॅ॰जिन्ना के शब्दो में बोल रहा था, "कॉंग्रेस हिन्दुओं की जमात है। इसके साथ मुसलमानों का कोई वास्ता नहीं है। कॉंग्रेस मुसलमानों की रहनुमाई कर सकती।"[24]

मुस्लिम लीग के कार्यकर्ता इस बात को मानने को तैयार ही नहीं थे कि हिन्दु मुसलमानों का असली शत्रु अंग्रेज है। "हमारा अंग्रेजों ने क्या बिगाड़ा है ? हिन्दु-मुसलमानों की अदावत पूराने जमाने से चली आ रही है।"[25] मुस्लिम लीग के ये मत अत्यंत जहरिले थे। दुर्भाग्य से लीग के कार्यकर्ताओं ने शहर, जिले और देहातों में इसप्रकार के विचार फैला दिए थे। मुस्लिम लीग राजनीति, धर्म और हुकूमत करने के अपने परम्परागत अधिकारों के आधार पर आम मुस्लिम लोगों को भड़काकर पाकिस्तान बनाने की पृष्ठभूमि तैयार की थी।

वानप्रस्थी जैसे लोग हिन्दुओं से मुस्लिमों के साथ भड़का रहे थे। छोटे छोटे बच्चों और युवकों में एक सम्पूर्ण कौम के प्रति नफरत के संस्कार दृढ करने का कार्य ये लोग कर रहे थे। इसी कारण तो अलगाव की भूमि विस्तृत होने लगी। एक सामान्य हिंदू व्यक्ति इससे फिसाद होने का डर जाहिर करता है तब वानप्रस्थजी डॉंटते हुए कहते हैं कि इसीकारण वे लोग आपको म्लेंच्छ कहते, डरपोक, कायर, नपुंसक कहते हैं। वानप्रस्थजी भी उन्हें यही कहकर चूप कर देते। हिन्दू तो समझौता चाहते लेकिन वानप्रस्थीजी इन लोगों के बच्चों और युवकों को लाठी चलाना और छूरा घोंपने का प्रशिक्षण देते हैं। इसीप्रकार के प्रशिक्षण के कारण रणवीर गरीब मुसलमान इत्रफरोश की हत्या कर देता है। इसप्रकार स्पष्ट है कि ब्रिटीश शासन

हिन्दुओं और मुसलमानों में अलगाव को बढ़ावा दे रहा था। विभाजन की तैयारी करने के बहाने प्रतिशोध की भावना पैदा कर रहा था। पाकिस्तान का निर्माण और विभाजन की घटना हमेशा के लिए हिंदू और मुस्लिम लीग के लिए जीवित समस्या बन बैठी है।

3· **साम्प्रदायिकता की समस्या**

"तमस" इस उपन्यास में हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक भावना का विस्तृत चित्रण किया है। व्यक्ति-व्यक्ति की स्वार्थान्धता, कायरता, गरीबों का शोषण धार्मिक अहंकार, राग, द्वेष, घृणा , लालच का चित्रण इनमें है।

इस उपन्यास की कहानी पाँच दिनों की है। लेखक ने साम्प्रदायिकता के हर एक बात को सूक्ष्मता से चित्रित किया है। संस्कृति मनुष्य के मानवी गुणों का विकास करती है। वह मनुष्य को विश्वव्यापी बनाती है। साम्प्रदायिकता संस्कृति के इस मानव पहलू के विरोध से ही शुरू होती है। यह मानव जाति के बदले एक दूसरे के भेद या विरोध रखनेवाली समूहों की धारणा पर आधारित होती है। यह धर्म या नस्ल के आधार पर मानव जाति के विभाजन और विभाजित समूहों की असमानता पर जोर देती है। एकता की जगह भेद और सहयोग की जगह निषेध करती है।

इसप्रकार व्यक्तियों के संकीर्ण विचारों से जो तनाव पैदा होता है, वह राष्ट्र के लिए हानीकारक होता है। प्रत्येक उपन्यास की अपनी समस्याएँ और आकांक्षाएँ होती है। इन्हें समझौते से सुलझाने की अपेक्षा फूट विघटन ही संभवनीय है, जिनका फायदा दूसरे लोग उठाते हैं। भारत के साथ प्राचीन काल से यही होता है। हिन्दी के विभाजनवादी उपन्यासों में समस्या का उल्लेख मिलता है।

भेदभाव की समस्या

"तमस" उपन्यास में विभाजनवाद और उसके वर्णन मिलते हैं। जातपात, छुआछूत, प्रान्तीयता, भाषावाद, अलगाव की प्रवृत्तियों का चित्रण है। मनुष्य के

संघर्षशील व्यक्तित्व का गंभीर चित्रण इनमें पाया जाता है। जो सत्यनिष्ठ होता है, भारत में विभिन्न धर्मो जातियों के लोग रहते हैं। इनमें छूआ-छूत एवं भेदभाव की बीमारी पायी जाती है। हर एक धर्म के रहन-सहन पर अपने धर्म का प्रभाव है। रिचर्ड लीजा को बताता है कि हिन्दु-मुसलमान और सिक्खों के नामों की अपनी अपनी खासियत होती है "मुसलमानों के नामों के अन्त में अली, दीन, अहमद ऐसे- शब्द लगे रहते हैं जबकि हिन्दुओं के नामों के पीछे ऐसे शब्द जैसे लालचन्द, राम लगे रहते हैं। रोशनलाल होगा तो हिन्दू, रोशनदीन होगा तो मुसलमान, इकबालचन्द होगा तो हिन्दू जो इकबाल अहमद होगा तो मुसलमान।"[26] इसप्रकार इन तीनों हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख इनमें नामों में फर्क, सिक्ख लोग दाढ़ी को तराश नही सकते। इन लोगों के खानपान में भी भेद है। मुस्लिम सूअर का मांस नहीं खाते, हिंदू गाय का मांस नही खाते, सिक्ख झटके का मांस खाते हैं और मुसलमान हलाल का मांस खाते हैं।

इसप्रकार इन तीनों में धार्मिकता को लेकर भेदभाव हैं, और इसका परिणाम साम्प्रदायिकता की समस्या निर्माण होती है। बढ़ती रहती है। लोग धर्म-सापेक्ष बने तो विश्व शांति की भावना मानवता धर्म को अपना लेती है।

5· **राष्ट्रियता की समस्या**

देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद देश-विभाजन की मॉग जारी रही और भारत पाकिस्तान दो राष्ट्रों के रूप में विभाजन हुआ लेकिन भारत-पाकिस्तान बनने का अपने अपने तरीके से विरोध या समर्थन किया। कॉंग्रेसे ने पाकिस्तान बनाये जाने का विरोध किया, हिन्दु-मुस्लिम के साम्प्रदायिक दंगे को रोकने के लिए भारत-पाकिस्तान को मान्यता दे दी।

"तमस" इस उपन्यास में भीष्म साहनी ने ऐतिहासिक सत्य का चित्रण किया है। जब कॉंग्रेस ने अपने पक्ष के लिए प्रभात फेरी निकाली है वह "वन्दे मातरम" "भारत माता की जय", "महात्मा गांधी की जय" जैसे नारे लगाते हैं। इन नारों का मुस्लिम लीग विरोध करती हुई "पाकिस्तान जिंदाबाद", "कायदे व्याजम, जिंदाबाद" के नारे लगाती है। एक कॉंग्रेस का कहना है कि आजादी सब के लिए है। सारे हिन्दुस्थान के लिए है।"[27]

इसप्रकार हिंदू-मुस्लिम दोनो जमात में दंगे की शुरूआत होती है और मुस्लिम लीग सिर्फ मुसलमान और पाकिस्तान बनने की संयोजना का समर्थन करती है। कॉंग्रेस के लोग कॉंग्रेस सबकी जमात है मानते हैं। इस प्रकार कॉंग्रेस और मुस्लिम लीग अपने अपने उद्देश्यों के लिए झगड़ते हैं और दो सम्प्रदाय अलग-अलग हुए हैं।

जो इनेगिने देशप्रेमी हैं वे एकता की मॉंग करते हैं। व्यक्ति के परस्पर संबंधों में सुधार की अपेक्षा इसमें मानवतावाद की व्याख्या इन उपन्यासों में की है। जो विश्वशांति, करूणा, राष्ट्रभावना की मॉंग करते हैं।

हिंन्दी साहित्य के लेखक "मंटो ने विभाजन के बारे में लिखा हैं" ।

हिन्दुस्तान आज़ाद हो गया था। पाकिस्तान अस्तित्व में आते ही आज़ाद हो गया। लेकिन इन्सान दोनों देशो में गुलाम था। साम्प्रदायिकताका गुलाम धार्मिकता का गुलाम, पशुता अत्याचार का गुलाम था। इस समय जो दंगे हुए उस में कितने मारे गये कितने घायाल हुए इसका अंदाज लगाना आसान नही था। इसकी गणना दो लाख से लेकर इस लाख तक गयी थी। इससे भय एवं आतंक फैला वह बहुत ही डरावना था।

लाहौर, लुधियाना, अमृतसर, जालंदर, दिल्ली, रावलपिंण्डी, गुडगांव में भयंकर दंगे हुए। दिन दहाडे एक धर्म के लोगों ने दूसरे धर्म के लोगों को मार डाला। हिन्दुस्तान से पाकिस्तान जानेवाले लोगों से खचाखच भरी रेल काट डाल गयी। घरों को मंडी को आग लगा दी गई। स्त्रियों का अपहरण हुआ, बलात्कार हुएँ। लोगो में दहशत के कारण असुरक्षा का भाव पैदा हुआ, और अपनी जमिन, घर छोड़ देना पड़ा।

भारत-विभाजन कितना भयानक था। भीष्म साहनी का "तमस" इन भयानक सांम्प्रदायिकता के हादसे की कहानी हैं। भीष्मजी ने घटनाओं का प्रत्यक्ष सीधा, सच्चा रूप चित्रित किया हैं। इसका मूल स्वर मानवीय करूण हैं। इस में झूलस-कर भारत के दो टुकड़े कालांतर में तीन हुए। भारत, पाकिस्तान और बांगलादेश, इन देशो के भयानक दंगो से मानवीय मूल्यों की उपेक्षा हो गयी। अखंण्डता का स्वप्न खंण्ड-खंण्ड बन बिखर गया। फूट और अवसरवादी तत्वों को बढ़ावा मिला।

अहिंसा नाम के पीछे हिंसा भडक उठी। सामुहिक हिंसा, लूट, खसोट की उथल-पुथल ने व्यक्ति मन की गहराई से लेखक का मन व्याकुल हो उठा। भीष्म साहनी जीने "तमस" रचना के रूप में लोगों के सामने अपने मन की व्यथा उद्‌घाटित की हैं। मनुष्य के भीतर छिपे पशुवृत्ति का उद्‌घाटन इस में हैं।

सांम्प्रदायिकता की समस्या पुरानी हैं। लेकिन आज भी देश इससे मुक्त नहीं हैं। 1929 में अलीगढ, जमशेदपूर, और अहमदाबाद में सांम्प्रदायिक दंगे हुए और आज उसने भीषण रूप धारण किया हैं। बाहर से एक खंण्ड भारत भीतर से अनेक टुकड़ो में बॉटा हुआ हैं। पंजाब, आसाम, काश्मीर, बिहार, केरल, आंध्र मे यही सिथती हैं।

आज के नेता अपनी कुर्सी बरकरार रखने के लिए साम्प्रदायिकता की भावना को भड़काने की कोशिश करते हैं। यह समस्या बहुत चिंतनीय हैं। रामजन्मभूमि, बाबरी मस्जिद, इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। यह प्रासंगिकता कल से आज और आज से कल भी जारी रहेगी। जिससे तनाव अशांति विघटन, बटवारा, मनुष्य की दुर्बलता, आपसी वैमनस्य, आर्थिक विषमता, स्वार्थान्धता दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं। जिसके परिणाम स्वरूप न्याय-अन्याय , विवेक-अविवेक, प्रेम घृणा की विसंगती पायी जाती हैं।

निष्कर्ष

भारत विभाजन का प्रमुख कारण है अंग्रेज नीति। अंग्रेज एवं ब्रिटीश साम्राज्य केवल अपने स्वार्थवश हिंदुस्थान पर राज कर रहे थे। हिंदु जनता को इसमें गुलामी का जीवन व्यतीत करना पड़ा। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के कारण भारतीय जनता के मन में नवजागरण निर्माण हुआ। जिसके कारण उनके मन में असंतोष फैला और स्वतंत्रता की मॉग होने लगी। लेकिन इसी समय अंग्रेजों ने हिन्दू-मुसलमानों में फूट डालने की कामयाब कोशिश की और भारत-पाक के रूप में हिंन्दुस्थान का विभाजन हुआ।

आदमी के मन में जो तनाव निर्माण होते हैं, वह देश के लिए हानीकारक होता है। जिनका फायदा अन्य लोग या देश उठाते हैं। कुछ बातों के लिए धर्म की आवश्यकता होती है क्योंकि धर्म के कारण आदमी का जीवन संतुलित बनता है। लेनिक धर्मान्धता आदमी की शांति खो देती है। इसीकारण मानवता धर्म्र, सर्वधर्म समभाव तथा शांति की मॉग इन उपन्यासों में की गयी है।

भीष्मजी ने "तमस" उपन्यास में विभाजन के दुष्परिणाम को स्पष्ट कर अंग्रेज नीति की ओर संकेत कर मानवता की माँग करता है। राष्ट्रवादी लेखक की भाँति उन्होनें यथार्थवादी उपन्यास की निर्मिती की है।

हिंदू, मुसलमान, सिक्ख, अंग्रेज आदि का मूल्यांकन कर भारतीय संस्कृति में विनाशकारी तत्वों की कुटिलता को चित्रित कर संकीर्ण वृत्ति का उद्‌घाटन किया है। धर्म और संप्रदायों की अर्थहीनता को स्पष्ट कर धर्म की सर्वव्यापकता को स्वीकार किया है।

हिन्दी साहित्य के अनेक उपन्यासकारों ने स्पष्ट किया है कि देश के बँटवारे के समय जो साम्प्रदायिक दंगों का रूप और भारत, पाकिस्तान की जन-यातना यह विभाजन की घटनाएँ, उस वक्त के लिए ही सीमित नहीं रही, या इतिहास के बिंदू पर समाप्त नहीं हुई। स्वातंत्र्योत्तर के बाद आज भी देशों में जीवन-व्यवस्था और जीवन मूल्यों का प्रश्न खड़ा है।

"तमस" में भीष्म साहनी ने अत्यंत सीधे सादे लोगों का चित्रण किया है। वे झगड़े लड़ाई करते वक्त यह जानते भी है कि, हम इन्सान है। हमारी मातृभूमि एक है, प्यार भी एक है लेकन हम क्यों लड़ते हैं, हमे लड़ाने वाला कोई और स्वार्थी पशु जेसा व्यवहार करनेवाला कोइ और है, वे लड़नेवाले पाकिस्तान क्या है ? हिंदुस्थान क्या है ? यह भी नही जानते ये सामान्य लोंग इस प्रकार विभाजन के कारण हिंदू मुस्लिम दोनों का वैमनस्य चरमसीमा का ही स्थान लेता है और आज भी पाकिस्तान हिंदुस्थान अलग होने से भी पाकिस्तान में मुस्लिमों की समस्याओं का अंत नहीं हुआ है। और हिंदुस्थान में हिंदुओं की समस्या का अंत भी नही हो चुका है। समस्या कम होने की जगह बढ़ती ही जा रही है। यह चित्र आज भी हम देखते हैं।

3.11. **आर्थिक समस्या**

प्रस्तावना

भीष्म साहनी की कोई भी कृति निरूद्देश्य नहीं है। उनके सभ- उपन्यासों में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से आज के भारतीय समाज की सभी समस्याओं का चित्रण हुआ है। यहाँ हमारा यह अभिप्राय कदापि नहीं है कि उनके उपन्यासों में किसी

एक समस्या को ही प्रस्तुत किया गया है। विधवा समस्या, नारी का शोषण, तलाक की समस्या, साम्राज्यवादियों की शोषण करने की नीति, राजनीतिज्ञों का दुहरा चरित्र, राजनीति में धर्म का दुरूपयोग, साम्प्रदायिकता, बच्चों का धर्म के नाम पर आत्मनिर्वासन, प्रशासन की शोषक नीति, निम्नवर्ग की रोजगार और आवास की समस्या, पति-पत्नी के वैवाहिक सम्बन्ध आदि विभिन्न समस्याओं का चित्रण उनके उपन्यासों में देखा जा सकता है।

आर्थिक समस्याओं का स्वरूप

किसी भी देा की आर्थिक स्थिति का उस देश की राजनीतक एंव सामाजिक व्यवस्था के कारण जाना जा सकता है। प्रमचंदोत्तर युग की व्यवस्था अंग्रेजों के अधिन थी और इन पूँजीपति अंग्रेजों के कारण देश की स्थिति दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही थी। देश में जो किसान वर्ग था उनका इन लोगों के कारण पतन ही हो रहा था। देहातों में महजनों को प्राथमिकता दी जाने लगी थी। अनेक उद्योग धन्धे समाप्त हो रहे थे।इसतरह दुर्दशा से भारतीय जीवन-संगठन का -हास होता जा रहा था। किसानों का शोषण अधिक हो रहा थां। उस वक्त ही बंगाल में अकाल पड़ा और इन अंग्रेजों ने चावल की निर्यात बंद होने के कारण लाखो लोग मृत्युमुखी पड़े। इन लोगों ने छोटे छोटे उद्योग धंदे बंद कर देने के कारण ये लोग किसान खेती पर अधिक निर्भर रहने लगे। यह बहुत ही बड़ी समस्या इन लोगों के सामने खड़ी थी। इस समस्या का हल करने के लिए दो ही उपाय इन लोगों के सामने थे। एक तो देश में औद्योगीकरण हो और दूसरे कृषि के नवीन ढंगों को अपनाया जाय, जिस कारण से उत्पादन बढ़े। लेकिन खेती न सुधारने का कारण है अशिक्षित किसान और उनके ओर सरकार भी ध्यान नहीं देती थी। धीरे धीरे औद्योगीकरण का विकास बढ़ा और उद्योग धंदे भी स्थापित किये।

1930 में जवाहरलाल जी ने इस समस्याकी ओर ज्यादा ध्यान देकर उद्योग धंदे बढ़ा दिये।

देश में कुछ कारखानों की स्थापना की गयी। इन कारखानों के कारण भारतीय पँजीपतियों की भी संख्या बढ़ी और जो मजदूर थे उनकी दयनीय स्थिती थी,

उन्हें उनके काम का मोबदला भी नहीं मिलता। मजदूरों का वेतन भी नहीं बढ़ाते। अतः मजदूर बेकार हो गये। निम्न-मध्य-वर्ग की स्थिति और भी दयनीय और शोचनीय हो गयी। सरकार ने भी इस ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। मनुष्य, स्त्रियाँ, नाबलिंग सभी दिन भर में 12 घंटे काम करते थे। उसके हिसाब से उन्हें मजदूरी बहुत कम मिलती थी। उनके रहने का कोई उचित प्रबन्ध नहीं था। उनकी बस्तियाँ गन्दी होती थी। बचे अधिकतर अनपढ़ होते थे। चिकित्सा, औषधि आदि का कोई उचित प्रबन्ध नहीं था। बाद में धीरे धीरे मजदूर वर्ग ने इस ओर ध्यान दिया और अपने अधिकारों की माँग की।

महानगरों की स्थिती भी दीनता, असहायता औरभयंकर बन गई है। गाँवों की दुर्दशा भी भयंकर बनी आत्म-प्रताड़ना बनी रही। आर्थिक विषमता हमारे देश का एक दुर्धर रोग है। हर पंचवर्शीय योजना को पूरे होते होते गरीबी पहले की अपेक्षा बढ़ती ही गई है। देश में अनेक योजनाएँ बनवाई लेकिन गरीबी कम होने के बावजूद बढ़ती ही गयी। इस देश में सत्तर प्रतिशत जनसंख्या को खाद्यान्न की भी कमी है।

आर्थिक विकास के हेतू शासनों ने अनेक योजनाओं का नियोजन किया। कृषि सुधार, भारी उद्योग, कुटीर उद्योग अनेक योजनाएँ शासनों ने चलवायी लेकिन आर्थिक विषमता कम होने के स्थान पर बढ़ ही रही है। मँहगाई, बेरोजगारी, निर्धनता जैसे आर्थिक दुर्भाग्य से कैसे मुक्ति पाएँ, साधारण लोगों के समझ में नही आ रहा है।

3.12. हिन्दी साहित्य में आर्थिक समस्या की अभिव्यक्ति

हिन्दी के अनेक उपन्यासों में आर्थिक समस्या और उसके कारण मध्यमवर्ग को क्या अवस्था हुई है ? इस बात को प्रस्तुत किया है। स्वतंत्रता के बाद भी हमारे देश की स्थिति और जो आज़ादी मिलने के बाद भी वही स्थिति रह चुकी है। आज भी जो इनेगिने पूँजीपती रह चुके हैं और श्रम करनेवाले मजदूर पिसते जा रहे हैं। इसका चित्रण अनेक लेखकों के साहित्य वे उसी परिस्थिति में रहने के कारण और उनके भी जीवन में यही स्थिति को मुँह देना ही पड़ता है। इसीकारण

वह परिस्थितियाँ उनके साहित्य में देखने को मिलती है।

आखरी दाँव

भगवतीचरण वर्माजी का यह उपन्यास है। इसमें मध्यवर्गीय जीवन के आन्तरिक खोखलेपन का चित्र प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में चमेली नामक पात्र है, जो अपने पति और ससुराल के अत्याचारों से पीड़ित होकर रतनु सुनार के साथ कुछ पैसे और गहने लेकर बम्बई भाग जाती है। बम्बई शहर में उन्के पड़ोस में राधा और जगमोहन रहते थे राधा चमेली की आज की दुनिया में पैसों का महत्त्व समझाती है।, "चमेली आज की दुनिया और खास तौर के बम्बई की दुनिया बड़ी आजीब है। इस दुनिया का देवता है रूपया। अगर तुम्हारे पास रूपया है तो तुम्हारे लाखों पाप छिप जाते हैं, अगर तुम्हारे पास रूपया नहीं है तो तुम्हारे हँसने-बोलने तक पर दुनिया को आपत्ति है, रूपया रूपया। जिस तरह हो रूपया चाहिए।"[28]

चमेली भी अनेक बार पैसे या धन की महत्ता को देखती है और वह दुनिया का देवता धन है, यह मानती है। वह अपने पति को धन का महत्त्व समझाकर उसे धन बढ़ाने के हेतु सट्टा खेलता है और वह सट्टे में हार जाता है। विवश बनकर वह चमेली को अभिनेत्री का घृणित जीवन व्यतित करने के लिए चमेली के पास भेज देता है। वह भी शराब का व्यापार करने लगा था।

जीवन मूल्यों का आधार पैसा

मनुष्य अपने जीवन के हर क्षेत्र में पैसों के पीछे दौड रहा है। आधुनिक काल में पैसों के लिए आत्मसम्मान और शरीर बिकता जा रहा है, प्यार, इमान सब बिकता जा रहा है। आज की भौतिक सभ्यता में पैसा ही सब कुछ है और हमारे सभी जीवन मूल्यों का आधार केवल पैसा ही रह चुका है। रामेश्वर कहते हैं, "हम सब पैसों के गुलाम हैं, धन हमारा ईश्वर है, हमारा अस्तित्व है। इस पैसे की दुनिया में न पाप है, न पुण्य है, न प्रेम है न भावना, जो कुछ है वह धन है। जिसके पास पैसा है वह सब कुछ खरीद सकता है। रूप, यौवन, शरीर, आत्मा सब बेच रहे हैं अपने को, धन के पिशाच के हाथों चमेली, हम

दोनों भी अपने को उस पिशाच के हाथो वेच चुके हैं।"[29]

इसप्रकार पैसों की ही विजय होती है। आर्थिक परिस्थिति अच्छी न होने के कारण चमेली अपने आप को शिवकुमार को समर्पित कर देती है।

"आखिरी दाँव" इस उपन्यास के कथानक में यह साबित होता है कि आर्थिक विषमताओं के कारण मनुष्य किस तरह पिसता जा रहा है और उसके जीवन में आर्थिक समस्या केकारण दुनिया के साथ संघर्षशील जीवन बिताना पड़ता है। इस उपन्यास में आर्थिक समस्या का चित्रण प्रस्तुत किया है। आधुनिक काल में आज की यह भड़किली और नकली सभ्यता में ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है, पैसा केवल पैसा। मनुष्य के लिए पैसा ही सब कुछ है।

इसप्रकार पैसों के अभाव में मानव प्राणी को अपने प्रिय से प्रिय व्यक्ति को भी "दाँव" पर लगा देना पड़ता है। चमेली के पति को अपनी प्रिय पत्नी को भी इस धन के कारण बीस हजार रूपए के लिए शरीर का विक्रय करना ही पड़ता है।

फणीश्वरनाथ रेणु विहार का "मैला आँचल" इस उपन्यास में आर्थिक अभावग्रस्त जीवन और आर्थिक दशा का सही चित्रण इस उपन्यास में किया है। देहातों में रहनेवाले लोगों में कही इने-गिने लोग छोड़कर सभी लोगों की स्थिति बहुत ही दयनीय है यह इसमें स्पष्ट किया है।

हर एक गाँव में दो-चार पूँजीपति होते हैं, वे रह चुके सब मजदूर और किसान का शोषण करता है, पूँजीपति गरीबों के गले में गरीबी के जरिये ही छुरी चलाता है। इस उपन्यास में गाँव मे रहनेवाले लोगों में मानवीय मूल्यों का स्थान लेने के बजाय आर्थिक समस्या ने ले लिया है। स्वतंत्रता मिलने के बाद भी इन गरीब किसानों के साथ ये शोषक दुर्व्यवहार करते हुए उनकी जमीन छिनलेते हैं, उनकी मारपीट की जाती है। उनके बहु-बेटियों की इज्जत-अब्रू लूट ली जाती है। इन लोगों को गरीबी एक शाप ही है।

इसप्रकार रेणुजी के इस उपन्यास में गरीबी या आर्थिक अवस्था के कारण उनके जीवन में किस तरह की समस्याएं आती है, कुछ लोग अपनी आर्थिक अभाव के कारण दो दिन की उनकी जीवनयात्रा एक दिन होने से पहले ही खत्म हो जाती है। यह सत्य स्थिति अपने उपन्यास में प्रस्तुत की है।

जहाज का पंछी

इलाचंद्र जोशी का यह उपन्यास आर्थिक विषमता की समस्या के कारण पढ़े लिखे युवक जो संगीत कला में निपुण होते हुए भी अपने रोजी रोटी का भी इन्तजाम नहीं कर पाता, इसकी आर्थिक समस्या के कारण ही यह उनकी अवस्था है। वह भूखा प्यासा युवक शिक्षित होते हुए भी भूख से अस्त होकर पाकेट मारने लगता है और हवालात में बंद हो जाता है। झूठी गवाही पर छूट जाता है। फिर वह बड़े पूँजीपति के यहाँ नौकरी करने लगता है, वह शिक्षित है यह जानकर नौकरी से निकाल दिया जाता है। धोबी की लॉन्ड्री में नौकरी करता है। कभी रसोई का भी काम करता है। आखिर इन्त में उसकी एक महिला से जान-पहचान होती है, वह अमीर होते हुए भी स्नेहशील थी। इस उपन्यास का नायक हर हालत का सामना करता है और आखरी वक्त वह यह जान पाता है कि "ईमानदारी सबसे बड़ा शत्रु है सत्य सबसे बड़ा पाप है, धन सबसे बड़ा अभाव है और जीवन सबसे बड़ा अभिशाप है।"[30] यह युवक बहुत ईमानदार था। लेकिन उसे यह युवक "संगीत कथ्य का अच्छा ज्ञाता होकर भी नौकरी नहीं मिलती। वह मध्यवर्ग के जीवन में विवशता, आर्थिक दयनीय अवस्था में जीता हुआ युवक है।

इससे स्पष्ट होता है कि हमारे यहाँ के शिक्षित होते हुए भी युवकों की स्थिति आर्थिक समस्या के कारण यह सब उनके साथ हो रहा है। ये सच्चाई है कि अनेक शिक्षित युवक अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं से भी वंचित हैं। यह परिस्थितियाँ लेखक ने इस उपन्यास के उदाहरण से स्पष्ट की है।

बीसवीं सदी में ऐसी अवस्था आ पड़ी है कि मनुष्य को मनुष्य न रहने देने की कसम खा रखी है, इस उपन्यास के नायक की तरह अनेक युवक हैं, जो

अपने जीवन के लिए आवश्यक साधन भी जुटा नहीं पाते। यह परिस्थिति बनानेवाला अन्यायपूर्ण समाज ही है।

इसप्रकार हमारे देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद लोगों की आशा थी कि बेकारी, भुखमरी यह समस्या खत्म होगी लेकिन सब कुछ उल्टा हुआ है। बेकारी, पहले से भी ज़्यादा बढ़ चुकी है।

मँहगाई

आज के युग में मध्यवर्ग के लोगों की स्थिति दयनीय बनी है। उन्हें दो वक्त की रोटी भी पाना मुश्किल-सा बना है, क्योंकि यह मँहगाई दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है।

इस मँहगाई ने मध्यवर्ग के लोगों की कमर ही तोड़ डाली है। जीवनोपयोगी चीजों के दाम इतने बढ़े हैं कि वह अपने हप्ताभर कमाई रकम में भी ले पाना उन्हें मुश्किल हो गया है। भूख बहुत बड़ी चीज है, इसके लिए आदमी कुछ भी काम करने के लिए तैयार होता है। इसमें किशू पात्र के द्वारा लेखक ने आज की बढ़ती मँहगाई तथा कठिन आर्थिक परिस्थिति का विश्लेषण उपन्यास में किया है।

किशू का ही नहीं तो उनके जैसे अनेक शिक्षित युवकों के सामने आर्थिक समस्या खड़ी है। आज़ादी के बाद भी मध्यवर्गीय युवा समाज किस प्रकार बेकारी, मँहगाई और भ्रष्टाचार की चक्की में पिसा जा रहा है, इसका प्रामाणिक उदाहरण गिरीधर गोपालजी ने अपने इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष

आर्थिक समस्या के कारण खासकर मध्यवर्गीय समाज ही त्रस्त है।ये लोग इस आर्थिक शोषण में कुचले हुए नज़र आ रहे हैं। मध्यवर्ग में हमें ज्यों ज्यों समस्याएँ दिखाई देती है, उनमें आर्थिक समस्या ही प्रमुख है। हिन्दी के अनेक उपन्यास इस तरह के मिलते हैं जो इस समस्याके कारण लोग अभावग्रस्त जीवन जी रहे हैं।

हिन्दी के अनेक लेखकों ने आर्थिक समस्या के कारण लोगों का जीवन नजदीक से देखकर उनका एक पात्र द्वारा चित्रण किया जो सच्चाई है, इस वर्तमान युग में घट रहा है, इसका सजीव चित्र उपन्यास द्वारा लोगों के सामने प्रस्तुत किया है।

आखिरी दाँव, बीज, आखरी आवाज, सूरज का सातवाँ घोडा, पत्थर बल पत्थर, झूठा सच इन उपन्यासों में आर्थिक विषमता के सच्चे पक्ष में उदाहरण मिलते हैं। हिन्दी के कई उपन्यासकार मध्य-वर्ग ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित होने के कारण उन्होंने जो अनुभव अत्यंत समीपता से प्राप्त किये हैं उन्हीं का चित्रण अत्यन्त प्रभावित ढंग से उपन्यासों में किया है।

हिन्दी के उपन्यासकारों ने आर्थिक विषमता का चित्र नग्न रूप में प्रस्तुत करने का बहुत उत्कृष्ट प्रयास किया है। एक ही नहीं तो हर व्यक्ति को आर्थिक परिस्थिती प्रभावित करती है। आज के जीवन में अर्थ से उत्पन्न समस्याओं से प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित रहता है। मनुष्य की हर एक इच्छा, आकांक्षाएँ, आर्थिक परिस्थिती पर ही निर्भर रहती है। इसप्रकार अनेक अलग-अलग पहलुओं का यथार्थ चित्रण हिन्दी उपन्यासकारों ने अपने विचारों का चष्मा चढ़ाकर आर्थिक समस्याओं की ओर देखा है।

3.14 **भीष्म साहनी के उपन्यासो में चित्रित आर्थिक समस्या**

प्रस्तावना

भीष्म साहनी ने अपने उपन्यासों में आर्थिक एवं नैतिक समस्या का यथार्थ चित्रण किा है। हमारी राष्ट्रीय भावना का एक पहलू है और दूसरा पहलू है आर्थिक समृध्दि का। दूसरे पहलू की समस्या का कारण है सामाजिक विषमता, दुर्बलता, गलत रूढियाँ, परम्परा अन्धविश्वास और देश में अंग्रेजों का आगमन उनकी विकास व्यवस्था। लेकिन वे एक उद्देश्य के लिए काम करते थे और वह था ज्यादा से ज्यादा धन बटोरना। भीष्म साहनी ने इस शोषण की नीतिका वर्णन किया हैं।

व्यापारी पूँजीपतियों की आर्थिक शोषण की समस्या

भीष्म साहनी के "तमस" इस उपन्यास में आर्थिक समस्या के बारे में देखे तो पूँजीपति और व्यापारी वर्ग ने ही देश को कमजोर बनाया है। इन लोगों का एक ही उद्देश्य था जनता का शोषण करना। ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाना भीष्म साहनी ने अपने घर से ही इस समस्या का वर्णन किया है। उनके पिता भी मध्यवर्गीय व्यापारी थे। उनके साथ भी शोषकों ने इसी तरह का सलूक किया था।

"तमस" इस उपन्यास में नत्थु एक गरीब आदमी है जो रोजी-रोटी के लिए मजदूरी करता था। उसके मजबूरी का फायदा उठाकर इस अंग्रेजों के कुत्ते ने उसे पाँच रूपये का लालच दिखाकर उससे सुअर मरवाकर मस्जिद की सीढ़ी पर फेंक दिया। इस छोटीसी घटना का बहुत बड़ा असर होता है। साम्प्रदायिक दंगों की शुरूआत होती है। अनेक जनसामान्य लोग घर से बेघर हो गए। अनेक लोगों की मृत्यु हुई। इस समस्या का असर अंग्रेजों पर बिल्कुल नहीं हुआ। एक तरफ साम्प्रदायिकता की आग में लोंगी की बरबादी और दूसरी तरफ यह व्यापारी रूपयों की वस्तु ढेले में खरीद रहे हैं। हिन्दु-मुसलमानों के हजारो रूपये ये कमान कौडियों के दाम में खरीद रहे थे क्योंकि उनहे मालूम था कि इन दंगो के कारण अनेक लोगों के सामने पैसों के लिए प्रश्न खड़े थे, वे पैसे के लिए मकान, खेती बिकते थे। इस अंग्रेज को उनके सुख दुःख की कोई परवाह नहीं है। उनका एक ही उद्देश्य था किसी भी हालत में ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाना। उनका आर्थिक शोषण करना। वे लोग हमारे देश की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने का पूरा पूरा फायदा उठा रहे थे। भारत की कपास सस्ते दामों में निर्यात की जाती थी। और ब्रिटन से कपड़े बनवाकर मँहगे दामों में बेचने का काम करते थे। इसीप्रकार हर प्रकार से वे लोग हमारे देश के लोगों का आर्थिक शोषण कर रहे थे। "इन संचार-साधनों का निर्माण करने से न केवल कच्चे माल के उत्पादन में वृध्दि होगी, बल्कि हमारे यहाँ बनाये जानेवाले कपड़े आदि के लिए भी भारत में माँग बढेगी। भारत की मंडी हमारी चीजों के लिए खुलती जाएगी।"[31]

ब्रिटिशों ने रेलगाडी शुरू की उसके पीछे भी भारत देश का आर्थिक शोषण ही था। "रेलगाडियाँ के निर्माण का सारा खर्च भारत के नाम डाला जा रहा है। खर्च बेशक हम कर रहे हैं, पर वह वास्तव में भारत को दिया जानेवाला कर्ज है। भारत मूल पूँजी भी अदा करेगा और उस पर ब्याज भी देगा····यदि हमें भारत से आर्थिक लाभ उठाना है तो हम रेलगाडियों का जाल ही नही बिछाना, सत्ता को भी हाथ लेना है।"[32]

इस प्रकार ब्रिटिश सरकार ने हमारे देश में आकर हर एक प्रकार से आर्थिक शोषण किया था और इन्हीं कारणों से हमारा देश आर्थिक समस्या से ग्रस्त बना और आज भी वह इन्ही समस्याओं को मुँह देकर जी रहा है।

"बसंती" इस उपन्यास में भी पूँजीपति शोषक वर्ग का खामोश ढंग से भीष्म साहनीजी ने तथ्यपूर्ण वर्णन किया। इन श्रमिक मजूदर अपने गाँवों में आकाल होने के कारण शहर आये और दो टुकड़ो के लिए अपने श्रम बेचने के लिए मजबूर होता है। आर्थिक समस्या के कारण उन्हें अनेक तकलीफे उठानी पड़ती हैं। उनकी इस मजबूरी का फायदा ये व्यापारी पूँजीपति लोग उठाते हैं। इन मजदूरों के जीवन में बहुत ही बड़ी आर्थिक समस्या है। वे लोग खुद जिस झोपड़ी में रहते हैं वह झोपडी जब सरकार के तरफ उज़ाडी जाती है तब वही लोग अपनी आर्थिक मजबूरियों के कारण झोपड़ी में रहनेवाले बीस रूपएँ मजदूरी में झोपड़ी उजाड देने का काम करते हैं। इस तरह इन्हीं लोगों का बसंती विरोध करती है। तो उनमें से एक मजूदर कहता है, "बनाई थी तो बनाई थी····सरकार तो इन्हें तोड़ेगी ही। हम अपनी मजूरी क्यों छोडे ? हम नहीं तोडेंगे तो कोई दूसरा आकर तोडेगा।"[33] इसप्रकार आर्थिक समस्या इस उपन्यास में निम्नवर्ग के माध्यम से लेखक ने हमारे सामने रखी है।

निष्कर्ष

इस प्रकार आर्थिक समस्या का कारण क्या है ? और इस प्रश्न को ढूँढने का सपल प्रयास भीष्म साहनीजी ने किया है। पूँजीपति, व्यापारी, सामन्त इन सभी लोगों की अमानवीय, अनैतिक, शोषकपूर्ण और घिनौनी वृत्ति का उन्होंने पर्दाफाश किया है।

संदर्भ सूची

1· डॉ·लाजवंती भटनागर, "धर्म संप्रदाय और मीरा का भक्तिभाव", पृ·16

2· डॉ·रामधारी सिंह दिनकर, "संस्कृति के चार अध्याय", पृ·611

3· तत्रैव, पृ·673

4· प्रताप ठाकूर / राजेश्वर सक्सेना, "भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना",पृ·126

5· रामजी मिश्र भागवतीप्रसाद निदारिया, "आधुनिक हिन्दी उपन्यास", पृ·434

6· तत्रैव, पृ·434

7· तत्रैव, पृ·435

8· डॉ·कमला गुप्ता, "हिन्दी उपन्यासों में सामन्तवाद", पृ·247

9· तत्रैव, पृ·248

10· प्रताप ठाकूर / राजेश्वर सक्सेना, "भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना", पृ·131

11· डॉ·पारूकान्त देसाई, "साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास", पृ·112

12· तत्रैव, पृ·113

13· तत्रैव, पृ·113

14· प्रताप ठाकूर / राजेश्वर सक्सेना, "भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना", पृ·130

15· डॉ·पारूकान्त देसाई, "साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास", पृ·115

16· जैनेंद्रकुमार, भगवतीचरण वर्मा, यशपाल, "आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक एवं आर्थिक चेतना", पृ·122-123

17· डॉ·चंद्रभानु सोनवणे, "हिन्दी उपन्यास विविध आयाम", पृ·343

18· डॉ·रामदरश मिश्र, "हिन्दी उपन्यास के सौ वर्ष", पृ·382

19· डॉ·सुर्यनारायण रणसुंभे, "देश विभाजन और हिन्दी कथासाहित्य", पृ·121

20· भीष्म साहनी, "तमस", पृ·198

21· डॉ·पारूकांन्त देसाई, "साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास", पृ·88

22· डॉ·सुदेश बत्रा, "हिन्दी उपन्यास बदलते परिप्रेक्ष्य", पृ·80

23· डॉ·सुर्यनारायण रणसुंभे, "देश विभाजन और हिंदी कथासाहित्य", पृ·106

24· भीष्म साहनी, "तमस", पृ·32

24· तत्रैव, पृ·152

26· भीष्म साहनी, "तमस", पृ·39

27· तत्रैव, पृ·43

28· डॉ।पितामबर सरोदे, "आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक एवं आर्थिक चेतना", पृ·262

29· तत्रैव, पृ· 263

30· तत्रैव, पृ·273

31· भीष्म साहनी, "मय्यादास की माड़ी", पृ· 202

32· तत्रैव, पृ· 200

33· प्रताप ठाकूर / राजेश्वर सक्सेना, "भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना", पृ· 112